



# भारत का नं. 1 संस्थान कौटिल्य एकेडमी

सफलता का प्रवेश द्वार ...

## Model Answer Key

Date : 04/08/2019

### A - वियना कांग्रेस-

- वियना की कांग्रेस सितम्बर 1814 से जून 1815 को आयोजित, यूरोपीय देशों के राजदूतों का एक सम्मेलन था।
- इसकी अध्यक्षता ऑस्ट्रिया राजनेता मेटर्निख ने की।
- उद्देश्य फ्रांसीसी क्रांतिकारी युद्ध, नेपोलियन युद्ध, नेपोलियन युद्ध से उत्पन्न समस्याओं को हल करना।

### A - Vienna Congress

The Congress of Vienna was held from September of 1814 to June of 1815. After the downfall of Napoleon Bonaparte, this international conference was called to create a balance among the European powers in such a way so as to prevent future wars and maintain peace and stability on the European continent.

Klemens von Metternich was the president of the Congress.

### B - त्रिकोणीय समझौता-

- यह समझौता ब्रिटेन, फ्रांस और रूस के मध्य हुआ।
- प्रथम विश्व युद्ध के पूर्व यूरोपीय देशों के परस्पर संधियों का परिणाम त्रिकोण समझौता था।
- इस समझौते के देश ही मित्र राष्ट्र के रूप में जाने गए।

### B- Triangular agreement

This agreement took place between UK, France and Russia.

The result of the treaty of European countries prior to World War I was the triangle agreement.

The countries of this agreement became known as the Allied nation.

### C - क्षणभंगुरवाद-

- यह बौद्ध धर्म से संबंधित एक संकल्पना है।
- जीवन और जगत की प्रत्येक घटना का अस्तित्व क्षणमात्र है। और प्रतिक्षण परिवर्तनशील है।
- स्थिर कुछ भी नहीं हैं।

### C - Non-eternalism

It is jain and budhist philosophy which believes that nothing is eternal.

Actually this human body is fleeting. Jainism emphasizes on renunciation of the desire to get rid of these grief.

### D - मुद्राराक्षस-

- यह संस्कृत का ऐतिहासिक नाटक है।
- इसके रचियता विशाखदत्त।
- इसमें चाणक्य और चन्द्रगुप्त मौर्य की राजनीतिक सफलताओं का वर्णन मिलता है।

### D - Mudrarakshasa

The Mudrarakshasa is a Sanskrit-language play by Vishakhadatta.

It is dated variously from the late 4th century to the 8th century CE.

It narrates the story of how Chandragupta Maurya overthrow Nanda Ruler with the help of Chanakya.

### E - उपनयन संस्कार-

- हिन्दू धर्म संस्कारों के सौलह संस्कारों में से दशम संस्कार है।
- बालक के जीवन में भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति के लिए।
- इस संस्कार में वेदारम्भ संस्कार का भी समावेश है।

### E - Upanayan Sanskar

In the Hindu religion rites, Upanayan Samskaras is the Tenth Sanskar.

It marked the acceptance of a student by a guru (teacher) and an individual's entrance to a school in Hinduism.

**F- बुन्देला विद्रोह:-**

- वर्ष 1842 में बुन्देलखण्ड के मधुकरशाह बुन्देला ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह का बिगुल फूँका था। इसलिए इसे बुन्देला विद्रोह कहा जाता है।
- 'सागर गजेटियर' में भी इसका उल्लेख है।

**G- कायथा संस्कृति:-**

- ताम्रपाषणकालीन ग्रामीण संस्कृति हैं।
- प्रमुख स्थल- कायथा तथा एरण।
- इसके मृदभाण्डों पर प्राक् हड़प्पन संस्कृति का भी प्रभाव दिखता है।
- यहाँ से स्टेटाइट और कौनेलियन कीमती पत्थरों के हार प्राप्त हुए हैं।

**H- बनावली:-**

- हरियाणा के फतेहाबाद में स्थित इस पुरास्थल की खोज 1973 में आर.एस. विष्ट ने की।
- सरस्वती नदी के किनारे स्थित है।
- यहाँ जल निकासी प्रणाली का अभाव था।
- यहाँ से मिट्टी का बना हल मिला तथा अधिक मात्रा में जौ मिला है।

**I- विदथ:-**

- ऋग्वैदिक कालीन वृद्धों व विद्वानों की संस्था थी।
- ऋग्वेद में इस पद का प्रयोग 122 बार हुआ।
- संस्था को उत्तर वैदिक काल में समाप्त कर दिया गया।
- इसमें अध्यात्मिक विचार विमर्श होता था।

**J- उत्तरमेयर अभिलेख:-**

- इस अभिलेख से चोल 'साम्राज्य के ग्रामीण प्रशासन की जानकारी प्राप्त होती है।
- दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य की पंचायती, स्थानीय स्वशासन व्यवस्था थी।
- पल्लव एवं चोल शासन के अन्तर्गत ग्राम अधिकतम स्वायत्तता का उपभोग करते थे।

The sacred thread (yagyopavit or janeu) is received with the chanting of Gayatri Mantra by the boy during this ceremony, that he continues wearing across his chest thereafter.

**F- Bundela Revolt**

The revolution started against the britishers in 1842 only on the land of Bundelkhand. This revolution is known as the Bundelkhand Rebellion or the Bundela Revolt under Madhukar Shah. During the rebellion, on 5 June 1842, 5 britishers were hanged in Mau tehsil of Chitrakoot district of Bundelkhand. The revolt was subdued and Madhukar Shah was executed.

**G- Kaytha Culture**

Kayatha, situated on the right bank of the Choti Kali Sindh river (a tributary of Chambal river). Dr. Wakankar discovered Kaytha. The Kayatha culture represents the earliest known agriculture settlement in the present-day Malwa region, it also featured advanced copper metallurgy and stone blade industry.

**H- Banawali**

Banawali is an archaeological site belonging to the Indus Valley Civilization period in Fatehabad district, Haryana. It was on the bank of river, saraswati. It was excavated by R.S Bisht.

**I- Vidatha**

Vidatha was an assembly meant for secular, religious and military purpose. Vidatha is frequently associated with woman women actively participated in the deliberations with men. Vidatha was the earliest folk assembly of the Aryans, performing all kinds of functions- economic, military, religious and social.

**J- Uthiramerur Inscriptions**

It is an Inscription situated in Panchayati village of Kanchipuram district of the Tamil Nadu state. This inscriptions highlight light on local politics Chola empire. From this Inscription it was known that village under Chola and Pallava enjoy more autonomy as compared to northern villages.

**K - आयंगर प्रणाली:-**

- विजय नगर साम्राज्य के ग्रामीण प्रशासन से जुड़ी व्यवस्था है।
- इसमें 12 प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी आयंगर कहलाते थे।
- इनका वेतन भूमि या कृषि उपज के रूप में दिया जाता था।

**L- चौसर-**

- अंग्रेजी भाषा के कवि, लेखक एवं राजनायक थे।
- 'कैटबरी टेल्स' की रचना की।
- इन्हें 'अंग्रेजी काव्य का पिता' कहा जाता है।

**M - ब्रूनो:-**

- पुर्नजागरण कालीन, इटली के वैज्ञानिक है।
- कॉपरनिकस के सिद्धांत को अनुमोदित किया।
- जिस कारण उसे 'जिंदा' जला दिया गया था।

**N - टेस्ट अधिनियम:-**

- इंग्लैण्ड की संसद द्वारा पारित एक कॉरपोरेशन एक्ट था।
- इसके अनुसार सरकारी पदों पर एंग्लिकन चर्च के अनुयायी ही नियुक्त किए जा सकते थे।
- जेम्स द्वितीय द्वारा इसकी अवहेलना की। जो इंग्लैण्ड की क्रांति का एक महत्वपूर्ण कारण बना।

**O - विजयालय:-**

- विजयालय को चोल साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक भी माना जाता है।
- इसने 'परकेसरी' की उपाधि धारण की।
- इसके पाण्डेय शासकों से तंजौर छीप कर अपनी राजधानी बनाया।

**K - Aynger System**

In Vijaynagar empire to run the administration smoothly, twelve administrative officers were appointed in different areas. It was collectively called Ayengar.

In lieu of their services, they were kept completely free of state taxes.

His post was ancestral and he was free to sell or mortgage his position to anyone.

**L - Chaucer-**

- was a poet, writer and politician of English language.
- Composed 'Canterbury Tales'.
- This is called 'Father of English poetry'.

**M - Bruno:**

- He is a scientist of Italy during renaissance period.
- Approved the principle of Copernicus.
- Because of which he was burnt alive.

**N - - Test Act:**

- There was a corporation act passed by the Parliament of England.
- According to this, the followers of the Anglican Church could be appointed on government posts.
- Defy it by James II. This made an important cause of England's revolution.

**O - Vijayalay**

Vijayalaya Chola was a king of South India (r. 850-870 CE) who founded the imperial Chola Empire. He ruled over the region to the north of the river Kaveri.

Thanjavur was his capital.

**PART- A 6 Marks****A - पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में हुई, उल्लेख कीजिए ?**

पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में—

- पुनर्जागरण, यूरोपीय इतिहास में 14वीं से 16वीं शताब्दी के बीच हुए परिवर्तनों को जाना जाता है।

पुनर्जागरण चेतना की अभिव्यक्ति, साहित्य कला एवं विज्ञान अपितु मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हुई।

**साहित्य के क्षेत्र में—**

- देशी भाषाओं को विकास हुआ जिससे मातृभाषाओं में भी साहित्य सृजन हो सका जैसे— इटालवी, जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश आदि।
- पुनर्जागरण काल में शैली परिवर्तन एवं लेखन में पद्य के साथ-साथ गद्य को महत्व दिया।  
उदाहरण— इटालवी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य।

**कला के क्षेत्र में—**

- पुनर्जागरण कालीन कला में चित्रकला, स्थापत्य कला, मूर्ति कला का भी विकास हुआ।  
जैसे— चित्रकला— मोनालिसा 'द लास्ट सपर'  
स्थापत्य— गोथिक शैली, अलंकरण का प्रयोग।  
संगीतकला— वायलिन, ओपेरा।

**विज्ञान के क्षेत्र में—**

- पुनर्जागरण में विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई।
- रोजर बेकन ने प्रयोगात्मक विज्ञान को जन्म दिया।
- गैलिलियो ने टेलीस्कोप का आविष्कार।  
पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हुई।

**B - गौरवशाली क्रांति के धार्मिक कारणों का वर्णन कीजिए ?**

- गौरवशाली क्रांति या रक्त हीन क्रांति से तात्पर्य इंग्लैण्ड की 1688 में हुई क्रांति से है।

**A - Renaissance manifested in different areas, please mention?**

The Renaissance was a period in European history, covering the span between the 14th and 17th centuries and marking the transition from the Middle Ages to modernity.

Thus, the Renaissance was a rebirth of the human spirit. This rebirth of the human spirit was reflected in art, architecture, literature, music, a new interest in learning and scientific discovery, the rediscovered curiosity about the world bringing exploration and discovery, and in new political ideas.

Man found out that he is not the only creature made according to the God. People understood that they were given a freedom of choice, religion and Holy Word.

The bold departure from medieval tradition was nowhere more clearly revealed than in Art of the Renaissance period.

The Renaissance literature had its birth in Italy. The first notable creation in this direction was Dante's 'Divine Comedy'. This book was written in Italian language and it was meant for the common people.

The Architecture of Italy was largely influenced by the spirit of Renaissance. The builders of this time constructed many churches, palaces and massive buildings following the style and pattern of ancient Greece and Rome.

Sculpture also underwent a significant change during the Renaissance Period. The famous sculptor of Italy during this period was Lorenzo Ghiberti, who carved the bronze doors of the Church at Florence which was famous for its exquisite beauty.

- In the age of Renaissance, Science developed to a great extent. The development in astrology, medicine and other branches of Science made this age distinct.
- During Renaissance, Fine Arts also bloomed. Italy was freed from the clutches of medieval song. The use of Piano and Violin made the song sweeter.

Infact, the Renaissance had created humanism in man. It increased the desire in men to know more and more.

**B - Describe the religious reasons of the Glorious revolution?**

The Glorious Revolution, also called "The Revolution of 1688" and "The Bloodless Revolution," took place from 1688-1689 in England. It involved the

**धार्मिक कारण—**

- **कैथोलिक धर्म का प्रसार—** इंग्लैण्ड का शासक जेम्स द्वितीय कैथोलिक मत का था।
- जिसने इंग्लैण्ड में कैथोलिक को गिरजाघर एवं अत्यधिक सम्मान दिया।
- **टेस्ट अधिनियम का स्थिगन—**
- जेम्स द्वितीय ने इस अधिनियम को स्थिगित कर दिया।
- इससे केवल एंग्लिकन चर्च के अनुयायी ही सरकारी पद पर रह सकते थे।

**धार्मिक अनुग्रहों की घोषणाएं—**

जेम्स द्वितीय ने इंग्लैण्ड को, कैथोलिक देश बनाने के लिए घोषणा की।

इसेस राजकीय पदों पर कैथोलिकों की नियुक्ति हो सकेगी।

**सात पादरियों पर अभियोग—**

- पादरियों द्वारा धार्मिक घोषणाएं न पढ़े जाने पर।
- आचार्य विशप सहित 6 साथियों पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया।

**कोर्ट ऑफ हाई कमीशन की स्थापना—**

- गिरजाघरों में राजकीय श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए।
  - कैथोलिक धर्म की अवहेलना करने पर दण्डित करना।
- इंग्लैण्ड की क्रांति में धार्मिक कारण प्रमुख रूप से उत्तरदायी थे।

**C - सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना को समझाइये ?****सिंधु घाटी सभ्यता की नगर योजना—**

- सिंधु घाटी सभ्यता एक नगरीय, सभ्यता थी जिसके जानकारी पुरातात्विक अवशेषों से होती हैं।
- इसकी सबसे प्रमुख विशेषता नगर नियोजन तथा जल निकासी प्रणाली थी।
- **सड़के—** इस सभ्यता की सड़के एक दूसरे को समकोण पर काटती थी।
- **नगर—** नगर दो भागों में विभक्त थे—
- प्रथम भाग में ऊँचे दुर्ग थे जिसमें शासक वर्ग निवास करता था।
- दूसरे भाग में सामान्य नागरिक, व्यापारी, कारीगर आदि।

**जल निकासी—** यह प्रणाली ग्रिड पद्धति पर आधारित

overthrow of the Catholic king James II, who was replaced by his Protestant daughter Mary and her Dutch husband, William of Orange.

**Causes of Glorious Revolution -**

James II wanted to propagate Catholicism and impose it on his subjects. This was the bases for the revolution of 1688. The Parliament did not approve his policy of the king.

The Glorious Revolution (1688–89) in England stemmed from **religious** and political conflicts. King James II was Catholic. His religion, and his actions rooted in it, put him at odds with the non-Catholic population and others. Many tolerated him, thinking that the throne would eventually pass to his eldest child, Mary, who was Protestant. This view changed with the birth of James's son in June 1688, as the king now had a Catholic heir. Alarmed, several prominent Englishmen invited Mary's husband, William of Orange to invade England. He did so in November. James soon fled England, and William and Mary were crowned joint rulers in April 1689.

**C - Explain the town plan of the Indus Valley Civilization?**

There was a sophisticated concept of town planning in the Indus Valley Civilization. From excavations we get to know that there was a flourishing urban architecture. Some of the features are listed below:

- Grid Pattern
- Harappa and Mohen-Jo Dero were laid out on a grid pattern and had provisions for an advanced drainage system.
- City Walls
- Each city in the Indus Valley was surrounded by massive walls and gateways. The walls were built to control trade and also to stop the city from being flooded.
- The acropolis and the lower cities
- A typical city would be divided into two sections, each fortified separately.

थी और सड़क किनारे पक्की नालियां होती थी।

**भवन**— बड़े-बड़े भवन हड़प्पा, मोहन जोदड़ों के निर्माण में पकी हुई ईंटों का प्रयोग हुआ।

- प्रत्येक घर में आंगन रसोई घर, स्नानागार होता था।
- हड़प्पाकालीन नगरों के चारों ओर प्राचीर बनाकर, चोर लुटेरों से बचाना था।

One section was located on an artificially raised mound (sometimes called acropolis) while the other level was on level ground.

- **The Residential Buildings**  
The residential buildings were mainly made up of brick and consisted of an open terrace flanked by rooms. These houses were made of standardized baked bricks as well as sun dried bricks. Some houses had multiple stories and paved floors.
- **In-house wells**  
Almost every house had its own wells, drains and bathrooms.
- **Drainage System**  
Each house was connected directly to an excellent drainage system, which indicates a highly developed municipal life.
- **Granaries**  
The largest building found at Mohenjo-Daro is a granary, running 150 feet long, 75 feet wide and 15 feet high.
- **No Temples**  
There are no traces of temple architecture or other religious places, yet the people practiced religion.

**D - ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक स्थिति के आधारों का वर्णन कीजिए ?**

**ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक स्थिति के आधारों का वर्णन—**

सिंधु सभ्यता के विपरीत वैदिक सभ्यता मूलतः ग्रामीण थी।

**सामाजिक आधार—**

**पितृसत्तात्मक**— ऋग्वैदिक समाज, एक पितृसत्तात्मक समाज था इसका सामाजिक आधार गोत्र या जन्म मूलक था।

**संयुक्त परिवार**— इस काल में यह प्रथा प्रचलित थी। दादा, नानी, पोते आदि के लिए 'नप्तृ' का प्रयोग होता था।

**वर्णव्यवस्था**— इस काल में इस व्यवस्था के चिन्ह दिखाई देते हैं। ऋग्वेद के 10वें मंडल के पुरुषसूक्त में चार वर्ण का वर्णन है।

**स्त्रियों की स्थिति**— पितृसत्तात्मक समाज के होते हुए भी महिलाओं को सम्मान प्राप्त था। यज्ञ कार्य में भाग लेती थी। लोपा मुद्रा, घोषा जैसी विदुषी स्त्रियों का वर्णन है।

**दास प्रथा**— इस काल में दास प्रथा प्रचलित थी लेकिन

**D - Describe the basis of the social status of the Rig Vedic period?**

The early Vedic Society represented human equality and simplicity at their best. It was a society of high moral standards.

It showed an advanced civilisation, a settled life, and an organised human relation.

The Kula or family was the basic unit of Rig-Vedic society. The Kula was headed by a Kulapa, who was usually the eldest member. Society was essentially patriarchal and the birth of a son was desired repeatedly. Status of women was equal to men in the early Rig-Vedic society. Both polygamy and polyandry were in vogue.

- In the evolution of Kingship in the later Vedic era, the priests (Brahmans) and rulers (Khsatriyas) consolidated their respective positions in society. The producers split into two groups. The free peasants and traders formed the group Vaishya while the slaves, laborers, artisans degraded to fourth group Shudra.
- Despite of the patriarchal character of the family, the position of women was much better in the Rig Vedic period than in later times. They could attend assemblies and offer sacrifices along with their husbands.

इनकी स्थिति यूनान, रोम की भाँति दयनीय नहीं थी।

**विवाह**— इस काल के समाज में अनुलोम, प्रतिलोम विवाह प्रचलित थे।

उपरोक्त आधारों पर स्पष्ट होता है कि ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक स्थितियाँ, वर्तमान समाज के लिए प्रेरणा स्रोत है।

- In the early Rig-Vedic era, entire instruction was given orally. Art of writing does not seem to have developed yet.

- Gotra or cowpen was a mechanism for widening social ties a new relationship was established between hitherto unrelated people.

- Rig Vedic economy was primarily pastoral.

- The main cereal produced by the early Rig-Vedic people was Yava or barley. Wheat (Godhuma) appears in later Vedic texts only.

- Music, both vocal and instrumental, was well known. Vedic Aryans played on the Vina and flute Vana to the accompaniment of drums and cymbals.

**E - यूनानी शासक सिकंदर का भारत में सफलता का कारण एवं भारत पर इसका क्या प्रभाव पड़ा ?**

**यूनानी शासक सिकंदर का भारत में सफलता का कारण एवं भारत पर इसका प्रभाव—**

— मकदूनिया का शासक व अरस्तू का शिष्य था जिसने 326 ई.पू. में सिंध के शासक पोरस से झेलम का युद्ध हुआ।

**सफलता के कारण—**

— भारत में किसी एक केन्द्रीय सत्ता का अभाव।  
— सिकंदर की सेना का शक्तिशाली होना।  
— आम्भी जैसे देशद्रोहियों का सहयोग भी उसकी सफलता का एक कारण था।

**भारत पर प्रभाव—**

— भारत और यूनान के बीच विभिन्न क्षेत्रों में प्रत्यक्ष संपर्क की स्थापना।  
— भारत में गंधार शैली की कला का विकास यूनानी प्रभाव का ही परिणाम था।  
— भारतीयों ने यूनानियों से 'क्षत्रप प्रणाली' और मुद्रा निर्माण की कला को ग्रहण किया।  
सिकंदर एक महान यूनानी शासक था। जो 19 महीने तक भारत में रहा। जो स्थल मार्ग से 323 ई.पू. में भारत से लौट गया था।

**E - Cause of Greek ruler Alexander's success in India and its impact on India ?**

The Indian campaign of Alexander the Great began in 326 BCE.

**Reasons for his success -**

- Alexander formed an alliance with Taxiles ruler known as Ambhi Kumar, the King of Taxila. They combined their forces against Taxiles' neighbour, the King of Hydaspes, King Porus who had chosen to spurn Alexander's command for him to surrender and was preparing for war.

- Alexander excellent war strategy.

- Alexander's decision to cross the monsoon-swollen river despite close Indian surveillance, in order to catch Porus' army in the flank, has been referred to as one of his "masterpieces".

- Division of Indian kingdoms and lack of unity was another reason for the success of Alexander.

**Effects of Alexander's invasion -**

- Alexander's invasion augmented political unification in northern India under the Mauryas.

- After the invasion, there was direct contact between India and Greece.

- Post the invasion there were Indo-Greek rulers in the northwest part of India.

- Grecian impact on Indian art can be seen in the Gandhara school of art.

- Greeks left dated records of Alexander's Indian campaign which has greatly helped in building chronology for the subsequent political events with certainty.

- It also helped in the establishment of cultural relations between the two.

F- जैन धर्म के सिद्धांतों का उल्लेख करें साथ ही जैन संगीतियों को बताइयें ?

जैन धर्म के सिद्धांतों का वर्णन साथ ही जैन संगीतियों का उल्लेख—

- जैन धर्म की स्थापना का श्रेय प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को जाता है, जिन्होंने 6 शताब्दी ई.पू. जैन आन्दोलन का प्रवर्तन किया।

सिद्धांत—

**दार्शनिक सिद्धांत—** अनीश्वरवाद, कर्मवचन, आत्मवाद, निर्वाण, पुनर्जन्म।

**व्यावहारिक सिद्धांत—** पंच महाव्रत, अणुव्रत।

**सामाजिक सिद्धांत—** नारी स्वातंत्र्य, आचार नग्नता, पाप।

जैन संगीतियाँ—

**प्रथम संगीति—** वर्ष (322 ई.पू.)। स्थान— पाटलिपुत्र(बिहार) अध्यक्ष— स्थूलभद्र।

**परिणाम—** बिखरे एवं लुप्त ग्रंथों का संचयन, 12 अंगों का संकलन, जैन धर्म का दो सम्प्रदायों में विभाजन— श्वेताम्बर एवं दिगम्बर।

द्वितीय (513 या 526 ई.पू.)— स्थान— वल्लभी (गुजरात) अध्यक्ष — देवर्षि क्षमाश्रमण।

परिणाम— कुल 11 अंगों को लिपिबद्ध किया गया।

G- शाक्त धर्म एवं वैष्णव धर्म को समझाइये ?

शाक्त धर्म एवं वैष्णव धर्म—

शाक्त धर्म—

- इस सम्प्रदाय में मुख्यतः दुर्गा एवं काली की उपासना की जाती है।
- चौसठ योगिनी मंदिर में शाक्त धर्म के विकास और प्रगति को प्रमाणित करने का साक्ष्य उपलब्ध है।
- दुर्गा माता का सर्वप्रथम उल्लेख 'मार्कण्ड पुराण' में मिलता है।
- सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों में मातृदेवी की पूजा के

F - Mention the principles of Jainism, as well as mention all Jain Councils to?

Jainism is a very ancient religion. As per some traditions, it is as old as the Vedic religion.

The Jain tradition has a succession of great teachers or Tirthankaras. There were 24 Tirthankaras the last of which was Vardhaman Mahavira. The first Tirthankara is believed to be Rishabhanath or Rishabhadev.

**Teachings of Jainism -**

- Mahavira rejected Vedic principles.
- He did not believe in God's existence. According to him, the universe is a product of the natural phenomenon of cause and effect.
- He believed in Karma and transmigration of the soul. The body dies but the soul does not.
- Stressed on equality but did not reject the caste system, unlike Buddhism. But he also said that man may be 'good' or 'bad' as per his actions and not birth.

**Triratnas of Jainism:**

1. Right faith
2. Right knowledge
3. Right conduct (observance of five vows)
  - Ahimsa (non-violence)
  - Satya (truth)
  - Asteya (no stealing)
  - Parigraha (no acquiring property)
  - Brahmacharya (abstinence)

**Jain Councils**

First council

Held at Pataliputra in the 3rd century BC.

Presided by Sthulabahu.

Second Council

Held at Vallabhi in Gujarat in the 5th century BC.

Presided by Devardhigani.

12 Angas were compiled here.

G- Explain Shakt religion and Vaishnava religion?

Shakta sect is one of the three major sects of Hinduism (Bhagwat, Shaiva, Shakta). In this religion, omnipotence is considered to be a goddess, not a man. However, the formula for worship of Mother Goddess has been discovered in the earlier Vedic period. But the cult of worship of Goddess or Shakti is as ancient as the Vedic period.

- The Shakta sect has a close relationship with Shaivism.
- In the Dasham Mandal of Rigveda, a complete Sukta is only worn in the worship of Shakti, which is called Tantric Devi.

प्रमाण मिलते हैं

### वैष्णव धर्म

- भागवत धर्म संभवतः सूर्यपूजा से संबंधित है। इस धर्म का सिद्धांत 'भगवद्गीता' में निहित है। इस धर्म की जानकारी उपनिषदों में मिलती है। इसका उद्भव मौर्योत्तर काल में हुआ।
- भागवत धर्म के संस्थापक वासुदेव कृष्ण थे, जो यादव कुल के नेता थे।
- इसकी जानकारी बेसनगर स्थित गरुड़ स्तम्भ अभिलेख में पायी जाती है।
- विष्णु के दस अवतारों का उल्लेख 'मत्स्यपुराण' में मिलता है, लेकिन 'वराह अवतार' सर्वाधिक लोकप्रिय है।
- दक्षिण भारत में इस धर्म का प्रसार एवं विस्तार अलवार संतो ने किया।

### H - मौर्यकाल की प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रकाश डालिए ?

#### मौर्य काल की प्रशासनिक व्यवस्था-

- मौर्य कालीन प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी कौटिल्य के अर्थशास्त्र, मेगास्थनीज की इंडिका एवं अशोक के शिलालेखों से मिलती है।
- मौर्य काल में केन्द्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था थी।

#### केन्द्रीय प्रशासन-

- इसका प्रमुख राजा होता था। जिसमें समस्त शक्तियां निहित होती थी।
- केन्द्रीय प्रशासन विस्तृत नौकरशाही पर आधारित था।
- केन्द्रीय स्तर पर 18 तीर्थ एवं 27 महामात्र अधिकारियों का उल्लेख मिलता है।

**प्रांतीय प्रशासन-** कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मौर्य काल 5 प्रांतों में विभक्त था। जिसका प्रमुख आर्यपुत्र कहलाता था।

जैसे- उत्तरापथ, दक्षिणापथ, अवंति, प्राची कलिंग।

**न्यायिक प्रशासन-** इस काल में सर्वोच्च न्यायालय राजा का, जबकि सबसे छोटा ग्राम न्यायालय था।

प्रथम - धर्म स्थीय (दीवानी)

द्वितीय- कण्टकशोधन (फौजदारी)

**सैन्य प्रशासन-** सम्पूर्ण सैन्य प्रशासन, 6 समितियों में विभाजित था।

**गुप्तचर प्रशासन-** मौर्य काल में संस्था एवं संचरा, गुप्तचरों का उल्लेख मिलता है।

The purpose of Shakta dharma is salvation. The meaning of the Shakta can also be that, save the Shakti. Power is life. Shakta Dharma believes that there is no power, then there is no meaning of accomplishment, intelligence and prosperity.

### Vaishnava Religion -

Vaishnavism is the branch of Hinduism in which Vishnu or one of his incarnations (usually Krishna or Rama) is worshipped as the supreme God. Members of Vaishnavism are called Vaishnavites or Vaishnavas. Vaishnavism is the largest Hindu denomination and it has numerous subdivisions. In addition to the Vedas, Vaishnavites especially revere the Bhagavad Gita.

One important group of such saints is the 12 Alvars who lived in South India in the 8th and 9th centuries. They wrote hymns that expressed the strongest love and passion for Vishnu and longing for His presence.

### H - Throw light on the administrative system of the Maurya period ?

The Mauryan Empire had an efficient and centralised administrative system. The chief source of information regarding administration under the Mauryan Empire is Chanakya's work, Arthashastra. Megasthenes also gives some information in his book Indika.

#### Central Government

- Mauryan administration was highly centralized.
- The king was the supreme power and source of all authority.
- He was assisted by a Council of Ministers. It was called 'Mantriparishad'. The ministers were called 'Mantris.'
- Tirthas: the Highest category of officials in the administration. There were 18 Tirthas.
- Amatyas: High ranking officials almost like present-day secretaries. They had administrative and judicial roles.

#### Local Administration

- The smallest unit of administration was the village. Head of had a lot of autonomy.
- Pradeshika was the provincial governors or district magistrates.
- Sthanika: Tax collectors working under Pradeshikas.
- Durgapal: Governors of forts.
- Antapala: Governors of frontiers.
- Akshapatala: Accountant General

#### Military

मौर्य कालीन प्रशासनिक व्यवस्था नौकरशाही एवं केन्द्रीय पद्धति पर आधारित थी।

The commander-in-chief of the entire military was called Senapati and his position was next to the king's. He was appointed by the king.

The military was divided into five sectors namely, infantry, cavalry, chariots, elephant forces, navy and transport & provisions.

Revenue was collected on land, irrigation, shops, customs, forests, ferry, mines and pastures. License fees were collected from artisans and fines were charged in the law courts.

Most of the land revenue was one-sixth of the produce.

The espionage system of the Mauryas was well-developed. There were spies who informed the king about the bureaucracy and markets.

There were two types of spies: Sansthana (stationary) and Sanchari (wanderer).

Gudda Purushas were the detectives or secret agents.

I - 'कनिष्क एक महान शासक था' इस कथन की व्याख्या कीजिए ?

'कनिष्क एक महानतम शासक था' इस कथन की व्याख्या—

- कनिष्क कुषाण वंश का महानतम शासक था, जो साम्राज्य, धर्म, कला एवं विद्वानों का संरक्षक भी था, जो अपनी उदारता व महानता के लिए प्रसिद्ध हैं—
  - 78 ई. राज्यारोहण किया जिसके उपलक्ष्य में शक संवत् चलाया।
  - कनिष्क की प्रथम राजधानी 'पेशावर' एवं दूसरी राजधानी 'मथुरा' थी। साथ ही कश्मीर में 'कनिष्कपुर' नामक नगर बसाया।
  - यह बौद्ध धर्म का हृदय से संपोषण एवं संरक्षण किया। अशोक के बाद कनिष्क ही बौद्ध धर्म का प्रबल समर्थक था।
  - इसने अनेक बौद्ध बिहारों, चैत्यों स्तूपों का निर्माण करवाया।
  - इसके काल में मूर्तिकला की गांधार एवं मथुरा शैली का जन्म हुआ।
  - कनिष्क ने सिल्क मार्ग पर अपना नियंत्रण कर राजस्व वसूल किया।
  - इसके दरबारी, पार्श्व, अश्वघोष, वसुमित्र तथा नागार्जुन विद्यमान थे।
  - कनिष्क ने शुद्ध स्वर्ण सिक्के जारी किए तथा कुषाणों को ताम्र सिक्के चलाने का श्रेय भी प्राप्त है।
- कनिष्क की उपलब्धियों एवं सहिष्णुता के कारण ही इसे

I - "Kanishka was a great ruler", explain this statement?

Kanishka was the most powerful ruler of the Kushan Empire. The capital of his empire was Purushpura (Peshawar). Under his rule, Kushan Empire extended from Uzbekistan, Tajikistan to Mathura and Kashmir. Kanishka was the successor of Vima Kadphises, as demonstrated by an impressive genealogy of the Kushan kings, known as the Rabatak inscription.

Kanishka convened the fourth Buddhist Council at Kundalvana in Kashmir.

He patronised Buddhism although he was very tolerant in his religious views. His coins contain a mix of Indian, Greek and Zoroastrian deities.

During this time, three distinct schools of art flourished: Gandhara School in northwest India, Amaravati School in Andhra and the Mathura School in the Ganges valley.

He also propagated the Mahayana form of Buddhism and he was largely responsible for propagating it in China.

The Kushanas controlled large parts of the Silk Route which led to the propagation of Buddhism into China. It was during this time that Buddhism began to spread to Korea and Japan also.

Kushanas were foreign invaders to begin with, but they were completely indianised in ways and culture.

It is said that the Kushana period in Indian history was a perfect forerunner to the golden age of the Guptas

He was the founder of the Shaka Era of A.D. 78.

‘द्वितीय अशोक’ भी कहा जाता है।  
उपरोक्त बिन्दुओं से स्पष्ट होता है कि कनिष्क एक महान शासक था।

From the following points we can justify that Kanishka was a great ruler.

**J - समुद्रगुप्त की दिग्विजय नीतियों का वर्णन कीजिए ?**

– गुप्त वंश का एक महान योद्धा तथा कुशल सेनापति था। समुद्र गुप्त ने दिग्विजय हेतु पाँच नीतियों को अपनाया, जो निम्नांकित हैं—

**राज्य प्रसभौद्धरण की नीति—** इस नीति का अनुसरण कर आर्यवर्त के 12 राज्यों को अपने साम्राज्य में मिलाया।

**ग्रहण मोक्षानुग्रह की नीति—** दक्षिणापथ के 12 राज्यों के संघ को पराजित कर उन्हें पुनः उनके राज्य सौंप दिये।

**परिचारिकीकृत नीति—** मध्य व उत्तर प्रदेश में स्थित आटविक (जनजातिय) राज्यों को सेवक बनाने की नीति।

**सर्वकरदानाज्ञाकरण की नीति—** उत्तर व पूर्वी सीमा पर स्थित पांच राज्यों को विजित किया जिसके लिए इस नीति का अनुसरण किया।

**आत्म निवेदन कन्योपायन.....—** पाँच विदेशी राज्यों को पराजित कर उनके साथ वैवाहिक संबंधों की नीति। समुद्र गुप्त ने इन नीतियों से भारत में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की।

**J - Describe the imperial policies of Samudragupta ?**

Samudragupta was among the greatest rulers of Gupta empire and it was under his rule that Gupta period came to be called the Golden Age. Samudragupta followed a policy of conquest and enormously enlarged his kingdom. His achievements are recorded in a long inscription engraved on a pillar at Allahabad, written in pure Sanskrit by his court poet Harisena. It enumerates the people and the regions conquered by Samudragupta.

The inscriptions state that Samudragupta adopted a different policy for different areas conquered by him as situations and circumstances required such a different approach.

In the North, in Ganga-Yamuna doab, he followed a policy of conquest and annexation of territories, i.e. Digvijaya. He defeated nine naga rulers and incorporated their kingdoms in the Gupta empire. He then proceeded to conquer the forest kingdoms of central India, mentioned as atavika rajyas. The rulers of these tribal areas were defeated and forced into servitude.

Then Samudragupta proceeded to South along the eastern coast conquering twelve kings on the way and reached as far as Kanchi near Chennai. In the South he followed Dharmavijaya, i.e. Conquest but no annexation. Therefore instead of annexing their kingdoms, he liberated and reinstated these kings on their thrones. This policy for south India was adopted because he knew that it was difficult to keep them under control once he returned to his capital in north. So it was enough for him that these states recognised his rule and power and paid him tributes and presents.

For his brilliant conquests Samudragupta known as Napoleon of India.

**K - Critical evaluate ‘Treaty of Versailles’?**

The Treaty of Versailles was one of the most important Peace Treaties that brought World War 1 to an End. It Was signed on June 1919 at Versailles.

**Major Provisions :**

- The Treaty ended the Phase of War between Germany and the Allied Powers.
- Germany was held responsible for War Guilt clause in which Germany and its allies were held responsible for triggering war.

**K - ‘वर्साय की संधि’ का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए ?**

– विश्व इतिहास में वर्साय की संधि एक विवादित संधि रही। जो द्वितीय विश्व युद्ध का कारण भी बनी। इस संधि की आलोचना को निम्न बिन्दुओं के तहत समझा जा सकता है—

**आरोपित संधि—** यह एक आरोपित संधि थी। इस संधि पर जर्मनी को विचार हेतु कोई अवसर नहीं दिया

गया। यह विल्सन के 14 सूत्रों पर आधारित भी नहीं थी। इस संधि हेतु मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी को संधि पर हस्ताक्षर हेतु बाध्य किया।

### क्षतिपूर्ति की कठोर शर्तें—

- संघ की शर्तें अत्यधिक कठोर थी जिसका उद्देश्य जर्मनी को आर्थिक रूप से पंगु बनाना था।

**प्रतिशोधात्मक संधि—** विजेता राष्ट्रों ने प्रतिशोधात्मक संधि अपनाया। फ्रांस ने अपनी पराजय और अपमान का बदला लेना चाहा।

**विश्वासघाती संधि—** विल्सन के 14 सूत्रों पर जर्मनी ने युद्ध बंद कर संधि स्वीकार किया था लेकिन संधि में इन सूत्रों का उल्लंघन हुआ था।

**वाइमर गणतंत्र के प्रति घृणा—** जर्मनी में वाइमर गणतंत्र की स्थापना हुई और उसे संधि पर हस्ताक्षर हेतु विवश किया गया। जिससे गणतंत्र के प्रति जर्मनी की जनता में आक्रोश था।

इस संधि के परिणाम स्वरूप यूरोप की राजनैतिक स्थिति और अस्थिर हो गई शस्त्र, अधिनयाकवाद का उदय हुआ, जो द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बना।

### L - 'फ्रांसीसी क्रांति' की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए ?

फ्रांसीसी क्रांति (1789-1799) फ्रांस के इतिहास की राजनैतिक और सामाजिक उथल-पुथल एवं आमूल परिवर्तन की अवधि थी जो 1789 से 1799 तक चली। बाद में, नेपोलियन बोनापार्ट ने फ्रांसीसी साम्राज्य के विस्तार द्वारा कुछ अंश तक इस क्रांति को आगे बढ़ाया। क्रांति के फलस्वरूप राजा को गद्दी से हटा दिया गया, एक गणतंत्र की स्थापना हुई, खूनी संघर्षों का दौर चला, और अंततः नेपोलियन की तानाशाही स्थापित हुई जिससे इस क्रांति के अनेकों मूल्यों का पश्चिमी यूरोप में तथा उसके बाहर प्रसार हुआ इस क्रांति ने आधुनिक इतिहास की दिशा बदल दी।

फ्रांसीसी सम्राट सोलहवें लुई के काल में गहराए वित्तीय संकट से उबरने के लिए वित्त मंत्री, तुर्गो और नेकर के सुधार जब विफल हो गये तो सम्राट को नए कर लगाने का प्रस्ताव पारित करने के लिए विवश होकर 5 मई 1789 को सामान्य सभा (एस्टेट्स जनरल) बुलानी पड़ी। बैठक में तृतीय वर्ग के लोग इस पक्के इरादे के साथ आए थे कि मतदान एस्टेट की बजाय व्यक्ति के आधार पर करवा कर रहेंगे ताकि वे सदा के लिए अल्पसंख्यक न बने रहें। वे स्वयं को फ्रांस की जनता का सच्चा प्रतिनिधि मानते थे। इसलिए उन्होंने खुद को राष्ट्रीय

- (c) The Treaty forced Germany to Disarm and Pay Large amount of War indemnity and grant Territorial Concessions.
- (d) The Treaty empowered the Allied States to control the Territories obtained from Germany and Declare them as League of Nation Mandates

### Why the treaty was Harsh for Germany :

- (a) The war indemnity asked from Germany was huge and seemed impossible for Germany to Pay.
- (b) The Allied Powers Demilitarized Germany to Weaken its Defence.
- (c) Germany Lost its overseas Colonies.
- (d) The Natural Resource Fields were Lost. For Example: Germany Lost 75 Percent Iron and 25 Percent Coal.
- (e) The Treaty was more like Dictated Peace rather than based on Ethical Grounds.

Many historians claim that the combination of a harsh treaty and subsequent lax enforcement of its provisions paved the way for the upsurge of German militarism in the 1930s.

It was also a cause for world war II.

### L - Put a light on the background of the 'French Revolution'?

The French Revolution marked a turning point in the history of humankind as it put an end to the medieval monarchical absolutism, feudal laws and social inequality.

### Causes of the French Revolution - Social Cause

As over the old regime, the French society and institution are described much before 1789 wherein the society was divided into three estates—the clergy, the nobility, and the commoners. The first two estates enjoy all the privileges right from the birth and are even exempted from any kind of taxes to the state. The third estate comprises of big businessmen, court, lawyers, officials, artisans, peasants, servants and even landless laborers. This estate usually were the ones who must bear the taxes.

### Economic Cause

The financial condition of France was very critical during the reign of Louis XVI. The national debt had increased beyond the limit. The national income was less than national expenditure.

### Political Cause

The long years of war had turned France into a dry land with almost no financial resources. During the

सभा कहना शुरू कर दिया।

वस्तुतः फ्रांसीसी क्रांति विश्व की अन्य क्रांतियों की अपेक्षा एक अनोखी क्रांति थी, क्योंकि इसकी पृष्ठभूमि में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक के साथ ही दार्शनिक एवं बौद्धिक कारण भी प्रमुख रूप से विद्यमान रहे हैं।

year 1774, Louis XVI came into power and found nothing.

### **Impact of the French Philosophers**

The revolutionary ideas of these philosophers spread throughout France and created awareness among the masses. The French intellectuals gave the motto "Liberty, Equality and Fraternity" which became the watchwords of the revolution of 1789.



**PART- A 15 Marks****A - अशोक के इतिहास के प्रमुख स्रोतों का उल्लेख कीजिए ?**

— अशोक का इतिहास मुख्यतः उसके अभिलेखों से ही ज्ञात होता है। इतिहासकार डी.आर. भण्डारकर महोदय ने केवल अभिलेखों के आधार पर ही अशोक का इतिहास लिखने का प्रयास किया है।

अशोक के अभिलेखों का विभाजन निम्न. वर्गों में किया जा सकता है—

— शिलालेख— इसे वृहद शिलालेख एवं लघु शिलालेख में बांटा गया।

— स्तम्भ लेख— इसे भी दो भागों में बांटा गया।

— गुहा लेख— ये गुफाओं में उत्कीर्ण लेख हैं।

अशोक के अभिलेखों की भाषा प्राकृत जबकि लिपि, ब्राह्मी, खरोष्ठी, आरमेइक यूनानी है।

— **शिलालेख**— अशोक के 14 वृहद शिलालेख तथा कुछ लघु शिलालेख हैं।

**14 शिलालेख—**

प्रथम— इससे जीव हत्या पर निषेध के बारे में लिखा गया है।

द्वितीय— इसमें विजित सीमान्त प्रदेशों और चिकित्सा के प्रबन्ध का उल्लेख है।

तीसरा— इसमें प्रादेशिक, रज्जुक और युक्त की नियुक्ति की जानकारी।

चौथा— प्रियदर्शी के धर्म आचरण से मेरी घोष, धम्म घोष में बदल गया।

पाँचवे— इसमें अशोक ने यश कीर्ति की जगह धम्म का पालन करने पर बल दिया।

तैरहवाँ— इसमें कलिंग विजय की जानकारी मिलती है।

**लघु शिलालेख**— इनमें अशोक के व्यक्ति जीवन की जानकारी मिलती है।

1. रूपनाथ, जबलपुर

2. गुर्जरा, दतिया

3. सारोमारो, शहडोल

— **स्तम्भ लेख**— इसमें अशोक कालीन प्रशासन तथा धम्म से संबंधित बातों का उल्लेख है। इनकी संख्या 7 हैं।

1. दिल्ली— मेरठ—इसे फिरोजशाह तुगलक मेरठ से दिल्ली लाया था।

2. दिल्ली—टोपरा— इसमें अशोक के सातों स्तम्भ लेख उत्कीर्ण हैं।

**A - Mention the major sources of Ashoka's history ?**

The foundation of the Mauryan Empire opens a new era in the history of India. For the first time, the political unity was achieved in India. Moreover, the history writing has also become clear from this period due to accuracy in chronology and sources.

There are two types of sources of Mauryan History. One is Literary and the other is Archaeological.

**1. Literary Sources****(a) Kautilya's Arthashastra**

It is a book written by Kautilya (other name of Chanakya) on polity and governance. It reveals the economic and political conditions of the Mauryan period. Kautilya was the Prime Minister of Chandragupta Maurya, founder of the Mauryan dynasty.

**(b) Mudra Rakshasa**

The book was written by Visakhadatta in Gupta period. The book gives an account of how Chandragupta Maurya defeated Nandas with help from Chanakya besides throwing light on socio-economic conditions.

**(c) Indica**

Indica was authored by Megasthenes who was the ambassador of Seleucus Nikator and Chandragupta Maurya's court. It depicts administration in Mauryan Empire, 7-caste system and absence of slavery in India. Although it is lost in its original form, it has survived in the form of quotations in the text of classical Greek writers such as Plutarch, Strabo and Arrian.

**(d) Buddhist Literature**

Buddhist texts such as Jatakas reveal socio-economic conditions of Mauryan period while Buddhist chronicles Mahavamsa and Dipavamsa throws light on the role of Ashoka in spreading Buddhism to Sri Lanka. Divyavadam, the Tibetan Buddhist text informs us about Ashoka's efforts in spreading Buddhism.

**(e) Puranas**

Puranas reveals us the lists of Mauryan kings and the chronology.

3. लौरिया— अरराज, बिहार
4. लौरिया— नन्दगढ़, बिहार
5. रामपुरवा— बिहार
6. प्रयाग स्तम्भ लेख— इसमें अशोक की रानी कारुवाकी तथा पुत्र तेवर का उल्लेख है। इसे रानी का अभिलेख भी कहा जाता है।

**गुहा लेख—** इनकी भाषा प्राकृत व लिपी ब्राह्मी है। अशोक ने बराबर की पहाड़ी में आजीवक सम्प्रदाय के लिए सुदामा, कर्णचौपार, लोमऋषि विश्व झोपड़ी गुफा का निर्माण करवाया।

**अन्य—** मास्की अभिलेख— इसमें अशोक ने स्वयं को बुद्ध शाक्य कहा और अशोक नाम मिलता है।

अशोक के शिलालेख, अभिलेख एवं गुहालेख से अशोक के प्रशासन की जानकारी के साथ-साथ मौर्य साम्राज्य की जानकारी प्राप्त होती है।

### B - 1917 ई. की बोल्शेविक क्रांति के कारणों का परीक्षण कीजिए ?

1917 ई. की रूसी क्रांति रूस की पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्था, किसानों और मजदूरों की विपन्नता, जारशाही की निरंकुशता, जनविद्रोह की परम्परा, सरकार में मजदूरों की स्थिति में सुधार लाने की इच्छा का अभाव तथा समाजवादी विचारधारा के प्रसार का सम्मिलित परिणाम थी। इस क्रांति के प्रमुख कारणों को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जाता है।

1. निरंकुश एवं स्वच्छाचारी जार का शासन रूप में लम्बे समय से निरंकुश जारशाही का शासन था रूस के स्वच्छाचारी जार शासक राजस्व के देवी सिद्धांत में विश्वास रखते थे जारशाही इस सिद्धांत पर विश्वास करती चली आ रही है कि जार रूपस का एकाधिपति है। क्रांति के समय जार, निकालेसन द्वितीय (1894—1917) था जो प्रतिक्रियावादी निरंकुश शासन में विश्वास करना था। उसने प्रगतिशील प्रवृत्तियों के विरुद्ध घोर दमन की नीति अपनाई। प्रेस की स्वतंत्रता नहीं थी, रूसी नागरिकों को किसी प्रकार के अधिकार प्राप्त नहीं थे एवं बौद्धिक गतिविधियों पर कठोर नियंत्रण था। ऐसी स्थिति में रूस के जारशाही की निरंकुशता जनता के लिए असहनीय हो रही थी और वह जारशाही के विरुद्ध संगठित होने लगी।
2. अयोग्य एवं भ्रष्ट नौकरशाही— रूस में जारों ने जो नौकरशाही की स्थापना की थी, वह अकुशल और जड़ थी। उच्च पदों पर कुलीन वर्ग (सामंत, जमींदार) को

### (a) Asokan Edicts:

There are 14 Major and 3 Minor Rock Edicts, 7 Major and 3 Minor Pillar Edicts, and 3 Cave Edicts located at several places in the Indian subcontinent. Their decipherment was done by James Prinsep of the EICO in 1837. Majority of them are in the nature of Asoka's proclamations to the public at large.

Other Inscriptions: Nagarjuna Hill cave Inscription of Dasaratha, Junagadh Rock Inscription of Rudradaman

### 3. Material Remains:

Pottery use of Northern Black Polished Ware (NBPW). Wooden palaces and halls are the other material remains.

### B - Examine the causes of the Bolshevik Revolution of 1917.

The Russian Revolution of 1917 was a series of political events in Russia, involving first the overthrow of the system of autocracy, and then the overthrow of the liberal Provisional Government

(Duma), resulting in the establishment of the Soviet power under the control of the Bolshevik party.

The Revolution can be viewed in two distinct phases:

- (i) The February Revolution of 1917, which displaced the autocracy of Tsar Nicholas II of Russia
- (ii) The October Revolution, in which the Bolshevik party and the workers' Soviets, led by Vladimir Lenin, overthrew the Provisional Government.

### Causes of the Russian Revolution -

#### (1) Lack of Leadership of Tsar Nicholas II

Tsar Nicholas II, who had come to power in 1894, had never shown leadership skills or a particular desire to rule, but with the death of his father, Alexander III, the Russian crown was thrust upon him.

- (2) The economic causes of the Russian Revolution largely originated in Russia's slightly outdated economy. Russia's agriculture was largely based on

नियुक्त किया जाता था, जो स्वयं भी स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश शासन में विश्वास रखते थे। नौकरशाही वंशानुगत स्वरूप लिए हुए थी। इस भ्रष्ट एवं अयोग्य नौकरशाही ने जनता को और भी आक्रोशित कर दिया।

3. किसानों की दयनीय दशा— रूस एक कृषि प्रधान देश था और वहां जनसंख्या का बहुसंख्यक हिस्सा कृषक ही थे। लेकिन उनकी स्थिति निम्न थी। यद्यपि जार अलेक्जेंडर द्वितीय द्वारा 1801 ई. में कृषिदासों की मुक्ति की घोषणा की गई थी किन्तु उसके बाद किसानों की दशा में कोई गुणात्मक परिवर्तन नहीं आया।
4. श्रमिकों की हीन दशा— रूस में औद्योगीकरण की स्थिति देर से आई अर्थात् 19 वीं शती के उत्तरार्द्ध में औद्योगीकरण प्रारंभ हुआ। फलतः श्रमिकों की भीड़ ने उनके परिश्रम का मूल्य कम कर दिया। न्यूनतम मजदूरी के बदले अधिकतम लेने का प्रकृति उद्योगपतियों में अधिक बढ़ गयी थीं श्रमिकों के घंटे निश्चित नहीं थे, मजदूरी भी निश्चित नहीं थी, एवं शारीरिक क्षतिपूर्ति का कोई प्रावधान नहीं था। उनमें असंतोष व्याप्त था। 1989 में गठित 'सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी' ने श्रमिक असंतोष को समाजवादी क्रांति में तब्दील कर दिया।
5. सामाजिक एवं आर्थिक असमानता— 1789 की फ्रांसिसी क्रांति के पूर्व जिस प्रकार फ्रांस में सामाजिक एवं आर्थिक असमानता व्याप्त थी लगभग वैसी स्थितियाँ इस समय रूस में मौजूद थी। रूसी समाज मुख्यतः दो असमान वर्गों में विभाजित था, प्रथम विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग जिसमें सामंत, कुलीन, भू-स्वामी, जार के कृपापात्र और बड़े पूंजीपति शामिल थे। दूसरा अधिकारविहीन वर्ग थी जिसमें किसान, मजदूर, मध्यमवर्ग, शिक्षक, बुद्धिजीवी इत्यादि सम्मिलित थे।
6. समाजवादी विचारधारा का विकास यूरोप में औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप समाजवादी विचारधारा अस्तित्व में आयी। समाजवादियों का उद्देश्य मजदूरों की कार्य एवं आवासीय दशाओं में सुधार करत था। रूप में भी औद्योगिक क्रांति के पश्चात समाजवादी विचारधारा का प्रसार होने लगा। फलस्वरूप सोशल डेमोक्रेडिट पार्टी (1889) तथा सोशलिस्ट रिवाल्युशनरी पार्टी (1902)की स्थापना हुई।
7. सांस्कृतिक कारण—जार की रूसीकरण की नीति—रूस में, यहूदी पोल, उजबेक, तातर आदि विभिन्न जातियाँ रहती थी। इन सबकी अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएँ थीं। जारशाही इन जातियों को अपनी संस्कृति छोड़कर रूसीकरण हेतु मजबूर कर रही थी।

independent peasants, who seldom owned modern machinery. Suffering from a naturally cold climate, Russia's growing season was only 4-6 months, compared to 8-9 in most of Western Europe.

- (3) 1905 Revolution - It was an uprising that was influential in convincing Tsar Nicholas II to alter the Russian government into a constitutional monarchy from an autocracy.
- (4) The social causes of the Russian Revolution mainly came from centuries of oppression towards the lower classes by the Tsarist regime and Nicholas's failures in World War I.
- (5) Dissatisfaction with Russian autocracy culminated in the Bloody Sunday massacre, in which Russian workers saw their pleas for justice rejected as thousands of unarmed protestors were shot by the Tsar's troops. The response to the massacre crippled the nation with strikes, and Nicholas released his October Manifesto, promising a democratic parliament (the State Duma) to appease the people.
- (6) Entry in World War-I - In 1914, Nicholas II decided to drag Russia into World War I, despite the fact that Russia was unprepared for war. More than 4 million Russian soldiers were killed or wounded or taken prisoners.
- (7) The March revolution was a general uprising which forced Nocholas II to abdicate his throne. A year later, he was executed by the revolutionaries.

9. रूस जापान युद्ध और 1905 की क्रांति— 1905 में रूस जापान के बीच युद्ध में रूस बुरी तरह पराजित हुआ वस्तुतः औद्योगिक क्रांति के बाद उपनिवेशों की तलाश में जापान ने चीन के मंजूरिया क्षेत्र पर रूस के अधिकार को चुनौति दी। अतः दोनों के मध्य संघर्ष छिड़ गया। युद्ध में रूस की पराजय ने रूस की महानता को मिथ्या सिद्ध कर दिया यानि की रूस एशिया के छोटे से देश जापान से पराजित हो गया। और रूस की जनता इस पराजय के लिए जारशाही की अव्यवस्था को दोषी मानकर विरोध करने लगी। और 9 जनवरी 1905 रविवार के दिन सेंटपीटर्सबर्ग की सड़कों पर मजदूरों का शांतिपूर्ण जूजुस जार के राजमहल की ओर प्रस्थान किया। शाही सेना ने मजदूरों के जुलूस का गोलियों की बौछार से स्वागत किया। यह दिन इतिहास में 'खूनी रविवार' के नाम से जाना जाता है।

10. तात्कालिक कारण— प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की भागीदारी— जारशाही की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा ने रूस को प्रथम विश्वयुद्ध में धकेल दिया। वस्तुतः 1914 में मित्र राष्ट्रों की ओरसे उसने भागीदारी निभाई। युद्ध में जर्मनी द्वारा रूसी प्रदेशों पर अधिकार किया गया। रूस में जबरन किसानों को सेना में भर्ती किया जा रहा था। सेना में उचित प्रशिक्षण अस्त्र और शस्त्र नहीं मिल पा रहे थे। लोहे और कोयले की कमी के कारण कारखाने बंद होने लगे। फलस्वरूप कृषक एवं औद्योगिक उत्पादन घट गया। ऐसी स्थिति में आर्थिक रूस से जर्जर रूस पतनोन्मुख स्थिति में आ पहुँचा रूसी सेनाओं की लगातार पराजय से सैनिक तो क्षुब्ध थे ही किन्तु रूस की जनता भी इसे राष्ट्रीय अपमान के रूप में देखने लगी थी।

इस क्रांति को वास्तविक क्रांति नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसके कारण स्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं आया। लेकिन इस क्रांति ने किसान, मजदूर बोल्शेविकों में आत्मविश्वास पैदा किया जिसने 1917 बोल्शेविक क्रांति की व्यूह रचना स्पष्ट कर दी थी।

**C - द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों का वर्णन कीजिए एवं इनका भारत पर क्या प्रभाव पड़ा ?**

द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम/प्रभाव

— प्रथम विश्वयुद्ध की तुलना में द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणाम अधिक व्यापक व विनाशकारी थे। जन-धन की हानि तो सभी युद्धों में होती है, किन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध में एटमी हथियारों के प्रयोग ने मानव के अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के परिणामों को निम्नलिखित बिन्दुओं के अंतर्गत समझा

**C - Describe the causes of World War II and what effect did they have on India ?**

In 1919, the League of Nations was formed in order to prevent the World War from being entangled and to prevent it in the future, but it failed completely in preventing World War II. In the short period of 20 years, there was another World War that was even more catastrophic than before. Many reasons for this war are similar to the causes of World War I. The situation in 1939 was not very different from

जा सकता है—

### इंग्लैण्ड का पतन

- द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व विश्व इतिहास में इंग्लैण्ड का प्रभुत्व कायम था। किन्तु युद्ध के उपरान्त इंग्लैण्ड की स्थिति दुर्बल हो गई तथा उसके तमाम उपनिवेश स्वतंत्र होने लगे।

### जर्मनी के मानचित्र में परिवर्तन

- द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति तक जर्मनी के पश्चिमी व पूर्वी भागों पर क्रमशः पूंजीवादी देश (अमेरिका, फ्रांस व इंग्लैण्ड) तथा साम्यवादी देश (रूस) का अधिकार हो गया था। इस प्रकार युद्ध के उपरान्त जर्मनी का विभाजन व पश्चिमी जर्मनी में हो गया। पूर्वी जर्मनी को 'जर्मन संघीय गणराज्य', जबकि पश्चिमी 'जर्मनी जनतांत्रिक संघ' नाम दिया गया।

### दो महाशक्तियों का उदय

- युद्ध के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर अमेरिका और सोवियत संघ नामक दो महाशक्तियों का उदय हुआ। युद्धकाल में अमेरिकी औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई थी। इस आर्थिक उन्नति ने अमेरिका की सैन्य शक्ति को भी मजबूती प्रदान की। इसी क्रम में अमेरिका ने परमाणु शस्त्र का विकास तथा विश्व के अनेक भागों में नौ-सैनिक अड्डों की भी स्थापित कर ली।

### शीतयुद्ध का आरंभ

- युद्ध के उपरान्त महाशक्तियों के रूप में उदित हुए राष्ट्र — अमेरिका व सोवियत संघ अलग-अलग विचारधाराओं क्रमशः पूंजीवादी व साम्यवादी का प्रतिनिधित्व करते थे। दोनों देशों के बीच विभिन्न समस्याओं के संबंध में तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गए।

### गुटनिरपेक्ष आंदोलन का उद्भव

- युद्धोपरान्त नवस्वतंत्र राष्ट्रों ने शीतयुद्ध की खींचतान से स्वयं को अलग रखने हेतु भारत के नेतृत्व में गुटनिरपेक्षता नीति अपनाई तथा सम्पूर्ण मानव जाति को तृतीय विश्वयुद्ध के महाविनाश से बचाए रखा।

संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना

- द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् शांति स्थापना के क्रम में 1945 ई. में सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन में मित्रराष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना की। यह संस्था अपने छह अधिकरणों के माध्यम से विश्व शांति ओर मानव के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक अधिकारों की स्वतंत्रता व विकास के लिए कार्य करती है।

### परमाणु युग का प्रारंभ

1914. European clans, militarism and imperialism also played an important role in World War II.

The main causes of World War II were:

- 1- Abusive treaty of Versailles -  
The Germans considered the treaty of Versailles as a national stigma He has a strong sense of retribution towards the Allies. Hitler grabbed the power by increasing this sentiment further. As soon as he came to power, he blew up the Treaty of Versailles and embarked on an aggressive aggressive policy and started another world war.
- 2- The rise of dictatorship powers  
After World War I, there was a rise and development of dictatorship powers in Europe. Mussolini in Italy and Hitler became dictator in Germany.
- 3- Imperialist trend  
A major cause of World War II was imperialism. Each imperialist power wanted to expand its empire and increase its power and wealth. This started the competition in the imperialist nation.
- 4- European Cleric  
Embarrassed by the growing power of Germany, the European nations start building groups for their safety. Its initiative was done by France. He created a German opposition group of nations around Germany.
- 5- Impact of the World Economic Recession  
The World Economic Recession of 1929-30 also contributed to World War II. As a result, the production decreased. Unemployment and starvation increased. Industry trades have had a bad effect on the economic recession at all. The situation in Germany was the worst. Hitler described the treaty of Versailles as responsible for this situation. This increased his power and he became a dictator.
- 6- Appeasement policy  
The appeasement policy also became one of the reasons for World War II. No European nation has tried to stop Germany, Italy's aggressive policy.
- 7- League of Nations failure -  
The main reason for World War II was the failure of the League of Nations. It was established to stop the iteration of wars and to maintain world peace. But it failed in its objectives.
- 8- Immediate Causes -  
Angry by Germany's disregard, Hitler invaded Poland on September 1, 1939. On September 3, England and France also declared war on Germany. Thus, World War II started.

- द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त परम्परागत अस्त्र-शस्त्रों व अत्यधिक संख्या सैनिकों की बजाय एटम बम से किसी देश की ताकत आकी जाने लगी। इस प्रकार नाभिकीय हथियारों की होड़ प्रारंभ हो गई।

### भारत पर प्रभाव

- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापान ने दक्षिण-पूर्व एशिया में ब्रिटिश सेना के जिन हिन्दुस्तानी सिपाहियों को युद्धबंदी बनाया था, उन्हें प्रेरित एवं उत्साहित कर सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज का गठन किया। यद्यपि सुभाषचन्द्र बोस अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुए, किन्तु उन्होंने भारतीय नवयुवकों में राष्ट्र के प्रति मरमिटने का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया। साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटेन द्वारा भारत को जबरन शामिल किए जाने के विरोध में 1939 ई. कांग्रेस की सरकारों ने त्याग-पत्र दे दिया तथा भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ किया। आगे चलकर कांग्रेस व गांधी के ऐसे ही प्रयासों से भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

### D - सम्राट हर्षवर्द्धन की उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए ?

- हर्षवर्द्धन (606ई.-647ई.) की उपलब्धियों की जानकारी बाणभट्ट की हर्षचरित व कादम्बरी, व्हेनसांग के यात्रा विवरण, अभिलेख, मुद्राओं से प्राप्त होती है। हर्ष वर्द्धन की उपलब्धियों को निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है-

**सैन्य उपलब्धियां-** हर्ष के सैन्य अभियानों के मुख्यतः चार उद्देश्य नजर आते हैं-

1. पुष्यभूति वंश की प्रतिष्ठा को पुर्नस्थापित करना।
2. चक्रवर्ती सम्राट की उपाधि धारण करना।
3. वृहद साम्राज्य का निर्माण करना।
4. शशांक को मारकर राज्यवर्द्धन की हत्या का बदला लेना।

**पूर्वी भारत का अभियान-** इस अभियान में शशांक को दंडित किया और मगध के शासक पूर्ववर्मन तथा कामरूप के शासक भास्करवर्मन ने हर्ष की अधीनता स्वीकार की। इस अभियान से हर्ष ने बंगाल बिहार, उड़ीसा पर अधिकार कर लिया।

**पश्चिम भारत का अभियान-** इसमें हर्ष ने पंजाब के व्यास नदी तक विभिन्न क्षेत्रों को अपनी अधीनता में लाया।

जैसे- अतरंजीखेड़ा, मथुरा, मतिपुर आदि।

**सिंध अभियान-** इससे धन की प्राप्ति हुई।

### Impact of World War 2 on India -

- Britain was now too weak to remotely govern India and also they understood that their hegemony over Indian people has eroded and they can no longer hold the subcontinent without using violence.
- There was an overwhelming popular support cutting across religions and classes for people who joined INA(Indian national army) and fought alongside the Japanese. This one the warning signal to British.
- The labor party which came to power was sympathetic to India's aspirations and soon declared independence.
- Battle of Kohima and Imphal: The Japanese regard the battle of Imphal to be their greatest defeat ever. It gave Indian soldiers a belief in their own martial ability and showed that they could fight as well or better than anyone else.

### D- Evaluate the achievements of King Harshavardhana ?

Harshavardhana was the greatest ruler of the Vardhana empire. He came to power in 606 CE. Prabhakara Vardhana and Yashomati were his parents. He had an elder brother namely Rajavardhana and a younger sister named Rajashri. He was also called "Shiladitya". Thaneshwar was his capital.

### Achievements of Emperor Harsha Vardhana -

1. Emperor Harsha achieved remarkable success both in the field of peace and war. Harsha established unity and integrity in the whole of North India.
  2. Harsha is mentioned as Sakal Uttarapatha (the lord of North India) in the Aihole inscription of Pulakesin II. His Empire extended From Himalayas in North to the river Narmada in south and from Punjab in west to Bengal in East. This unification of North India by Harsha was one of the remarkable achievements.
  3. Harsha was an efficient administrator as well. He successfully established a strong and efficient administrative system in whole of North India.
- During the reign of Harsha and common public enjoyed a large degree of freedom in the public and private life.
4. The reign of Harsha was also characterized by lofty ideals and benign principles. According to Hiuen

**दक्षिण भारत का अभियान**— इस अभियान की जानकारी रविकीर्ति के एहोल अभिलेख से प्राप्त होती है। जिसमें पुलिकेशन द्वितीय नर्मदा नदी के किनारे हर्ष को पराजित करता हैं।

इस प्रकार हर्ष ने बंगाल, बिहार उड़ीसा मालवा आदि पर अधिकार कर लिया था।

**धार्मिक उपलब्धियाँ**— हर्षचरित व व्हेनसांग के विवरण से पता चलता है कि— हर्ष शिव व सूर्य का उपासक था।

— हर्ष ने विभिन्न धर्मों को संरक्षण प्रदान किया।

उदाहरण— हर्ष प्रत्येक 5वें वर्ष प्रयाग में महामोक्षपरिषद का आयोजन करवाता था।

अनेक बौद्ध स्तूपों, बिहारो का निर्माण करवाया।

— **सांस्कृतिक उपलब्धियाँ**— हर्ष विद्वानों का संरक्षण था उसके दरबार में बाणभट्ट, जैसे विद्वानों को संरक्षण प्राप्त था।

हर्ष ने स्वयं रत्नावली, प्रियदर्शिका नामक नाटकों की रचना की।

**अन्य उपलब्धियाँ**— हर्ष वर्धन ने लोक कल्याण के क्षेत्र में अनेक कार्य किए जैसे सड़क, तालाब आदि का निर्माण हर्ष ने चीन के साथ संबंध स्थापित किए दोनों पक्षों के मध्य राजदूतों का आदान-प्रदान हुआ। लेकिन उपलब्धियों के बावजूद कुछ सीमाएं भी हैं—

1. हर्षवर्धन शशांक एवं पुलकेशन को युद्ध में पराजित नहीं कर सका।
2. नेपाल सिंध एवं कश्मीर, विजय के स्पष्ट प्रमाण नहीं मिले।
3. वह स्थायी सेना का निर्माण भी नहीं कर सका।

इन सीमाओं के बावजूद हर्ष की उपलब्धियों को कम नहीं आंका जा सकता है। किन्तु हर्ष की सफलता यह है कि सामंती वातावरण में भी उसने एक वृहद साम्राज्य की स्थापना की।

Tsang Harsha pursued high ideals during his reign. No excessive control was imposed on the subjects and the demands of the state were minimal. The rate of land revenue collected by Harsha was 1/6th and other taxes were also light.

5. According to contemporary sources Harsha fought a number of wars and battles during his reign and conquered many areas. He did not adopt barbarous methods of conquests. He never ordered mass slaughter of civilians and emphasized upon the moral methods. This was also part of his achievements.

6. It is said that Harshavardhana's empire reminded many of the great Gupta Empire as his administration was similar to that of the administration of the Gupta Empire. There was no slavery in his empire and people were free to lead their life according to their wish.

7. According to contemporary sources, Harsha exchanged embassies with China and the Chinese rulers sent three embassies to the court of Harsha. Harsha also maintained friendly relations with King Bhaskar Varman of Kamarupa.

It mean Harsha was also remarkable for his friendly diplomatic relations.

8. Harsha was also great patron of cultural activities and organized Kanauj assembly in the honor of Hiuen Tsang. He patronized Banabhatta, the author of Kadambari and Harshacharita. Harsha himself was a fine scholar and composed Nagananda, Ratnavali and Priyadarshika.

**PART- B****A - मुईजुद्दीन बहरामशाह—**

- गुलाम वंश का शासक व रजिया का उत्तराधिकारी था।
- इसके काल में नायब-ए-मुमलकत का पद बनाया और एतगीन को नियुक्त किया।
- मंगोल आक्रमण से, 1242 ई. को बहरामशाह की हत्या कर दी।

**B - इब्नबतूता—**

- यह मध्यकाल में मुहम्मद बिन तुगलक के काल में भारत आया।
- इब्नबतूता एक मोरक्कों यात्री विद्वान तथा लेखक था।
- इसकी प्रसिद्ध पुस्तक रेहला हैं।

**C - तुलुववंश—**

- विजय नगर साम्राज्य का तीसरा राजवंश था, जिसकी स्थापना वीर सिंह नरसिंह ने की थी
- इस वंश का शासक कृष्णदेवराय सम्पूर्ण विजयनगर साम्राज्य का महानतम शासक था।
- सदाशिव इस वंश का अंतिम शासक था।

**D - शेख अहमद सरहिंदी—**

- नक्शबंदी संप्रदाय के सूफी संत थे।
- मुगलबादशाह जहाँगीर इन्हीं का शिष्य था।
- सरहिंदी ने भारत में सर्वप्रथम एक क्रमबद्ध धर्मप्रचार का कार्य प्रारंभ किया।

**E - मध्यप्रदेश समारोह—**

- यह समारोह मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग द्वारा वर्ष 1982 में प्रारम्भ किया।
- समारोह में प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत की झलकियाँ, गायन, नृत्य प्रस्तुत की जाती है।
- इसका आयोजन नई दिल्ली में किया जाता है।

**A - Muiz ud-Din Bahram Shah**

Muiz ud-Din Bahram was the sixth sultan of the Mamluk Dynasty.

He was the son of Shams ud din Iltutmish.

He declared himself as a king with the support of nobles when Razia went Bathinda to crush a revolt.

**B - Ibn Battuta**

The full name of Ibn Battuta was Muhammad Ibn Battuta.

Ibn Battuta was a Muslim Moroccan scholar, and explorer who widely travelled the medieval world.

In 1334, Ibn Battuta arrived in India during the reign of Muhammad Tughlaq.

His notable work is Rihila.

**C - Tuluva Dynasty**

Tuluva is the name of the third ruling dynasty of the Vijayanagara Empire.

The most famous ruler of the Vijayanagar kingdom, Krishna Deva Raya belonged to this dynasty.

Tuluva Narasa Nayaka (1491-1503 AD) was the founder of Tuluva Dynasty.

Sadashiv Raya was the last ruler of this Dynasty.

**D - Sheikh Ahmad Sirhindi**

He was born on 26 June 1564 in Sirhind Punjab region during Mughal empire.

He was Indian mystic and theologian who was largely responsible for the reassertion and revival in India of orthodox Sunnite Islam as a reaction against the syncretistic religious tendencies prevalent during the reign of the Mughal emperor Akbar.

He was a prominent member of Naqshbandi Sufi order.

**E - Madhya Pradesh Samaroh**

Madhya Pradesh Samaroh or ceremony is organized at national capital, Delhi. This festival is used as a platform in order to showcase the rich cultural heritage of our state and thus it helps to glorify the cultural panorama of our state at national level.

Various dance programs, singing programs, playing different instruments and different kinds of exhibitions are organized to showcase our traditions. This festival goes on for a

week and is attended by various state and national dignitaries.

**F- अर्जुन देव-**

- सिक्खों के पाँचवें गुरु थे, इन्होंने 1589 ई. में हरमिंदर साहब का निर्माण करवाया।
- इन्हें सच्चा बादशाह भी कहाँ जाता है।
- 1604 ई. में आदिग्रंथ की रचना की।
- खुसरों को समर्थन देने पर, मुगलबादशाह जहाँगीर ने मृत्युदण्ड दिया।

**G- भोपाल का युद्ध-**

- 1737 ई. में मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम व निजाम के मध्य हुआ।
- युद्ध के पश्चात दुरई सराय की संधि- 1738 ई. में हुई।
- इस संधि से निजाम ने मालवा पर मराठों का प्रभुत्व स्वीकार किया।

**H- जगनिक-**

- कालिंजर नरेश परिमल देव के दरबारी कवि थे।
- रचनाएँ- आल्हा खण्ड एवं परिमल रासों है।
- बुन्देली की उपबोली बनाकरी का प्रयोग कर, आल्हा ऊदल के शौर्य को गीत रूप दिया।
- आल्हाखण्ड विश्व की सबसे बड़ी लोकगाथा है।

**I- विद्याधर-**

- चंदेल वंश का प्रतापी शासक था।
- 1019 ई. में महमूद गजनवी ने आक्रमण किया था, जिसमें विद्याधर ने कूटनीति पूर्वक संधि कर ली थी।
- खजुराहों में कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण करवाया था।

**J- साँची के बौद्ध स्तूप-**

- सम्राट अशोक ने रायसेन जिले के साँची में बौद्ध स्तूप, बिहार एवं एकाश्म स्तम्भ का निर्माण करवाया था।
- साँची स्तूप की खोज 1818 ई. में जनरल टेलर ने की थी।
- यूनेस्को द्वारा वर्ष 1989 ई. में साँची स्तूप को विश्व धरोहर घोषित किया।
- साँची में तीन बौद्ध स्तूप हैं।

**F - Arjan Dev**

He was the 5th guru from 1581 to 1606.

He compiled the Adi Granth, the scriptures of the Sikhs.

He completed construction of Sri Darbar Sahib also known as Golden Temple in Amritsar.

He became the first great martyr in Sikh history when Emperor Jahangir ordered his execution. Thus, he was hailed as Shaheedan-de-Sartaj.

**G - Battle of Bhopal**

In 1723, Bhopal came under the suzerainty of the Nizam of Hyderabad. In 1737, Marathas defeated the Mughals and the Nawab of Bhopal in the Battle of Bhopal, and started collecting tribute from the state.

This battle is known as battle of Bhopal

**H - Jagnik**

Jagannik was court poet of Kallinger's Chandel ruler. After considering the famous hero and noble leader of Raja Paramal Mahoba's hero, Aalha-Uddal, the protagonist created the book 'Alha Khand'.

**I - Vidhyadhar**

Vidyadhara was a ruler of the Chandela dynasty of central India. He ruled in the Jejakabhukti region (Bundelkhand in present-day Madhya Pradesh). Vidyadhara expanded the Chandela power between Chambal river in the northwest and Narmada River in south.

Kandariya Mahadeva Temple at Khajuraho was built by Vidhyadhar.

**J - Bodhha Stupa of Sanchi**

Sanchi Stupa is a UNESCO world heritage site since 1989. Sanchi is in Madhya Pradesh.

It was built by Ashoka in the 3rd century BCE.

Its nucleus was a simple hemispherical brick structure built over the relics of the Buddha.

This Stupa is the oldest stone structure in India that was built during the Mauryan period.

**K - मणिकर्णिका-**

- झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम था।
- 1857 ई. की क्रांति की प्रमुख क्रांतिकारी नेतृत्व किया।
- इनका जन्म वाराणासी में हुआ था।
- अंग्रेज जनरल ह्यूरोज से पराजित होकर वीरगति को प्राप्त हुई।

**L- खेड़ा सत्याग्रह-**

- 22 मार्च 1918 को खेड़ा सत्याग्रह भारत में गांधीवादी किसान सत्याग्रह था।
- फसल खराब होने के कारण लगान न अदा करने की मांग की।
- गुजरात सभा ने इस आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- इस आन्दोलन में विट्ठलभाई पटेल तथा वल्लभभाई पटेल सहयोगी थीं।

**M - ददनी प्रथा-**

- इस प्रथा के अंतर्गत ब्रिटिश व्यापार, भारतीय कारीगरो, उत्पादकों, शिल्पियों को अग्रिम धन देते थे।
- शर्तनामा लिखवाया जाता था निश्चित तिथि पर न देने पर जुलाहों का शोषण किया जाता था।
- जुलाहो ने अपने हाथ के अंगूठे तक कटवा लिए तथा अपना पेशा छोड़ दिया।

**N - गांधी-दास पैक्ट-**

- नवम्बर 1924 में गांधी, सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू ने एक संयुक्त व्यक्तव्य दिया, जो गांधी-दास पैक्ट के नाम से जाना जाता है।
- असहयोग अब राष्ट्रीय कार्यक्रम नहीं रहेगा। ऑल इंडिया स्पिनर्स एसोसिएशन' को संगठित करने तथा चरखे का प्रचार प्रसार की जिम्मेदारी गांधी जी को सौंपी गई।
- मुख्य बातों में विधान परिषदों के भीतर स्वराज पार्टी को कांग्रेस के नाम व अंग के रूप में कार्य करने का अधिकार दिया गया।

**O - डिकी बर्ड योजना-**

- गवर्नर जनरल लार्ड माउन्टबेटन के द्वारा लायी गयी थी।
- इसे साम्प्रदायिक दंगे निपटाने तथा प्रान्तीय सरकारों के हाथों से सत्ता सौंपने के लिए।
- जवाहर लाल नेहरू ने इसे अस्वीकार कर दिया था।
- इस योजना को बाल्कन प्लान भी कहा जाता है।

**K - Manikarnika**

Manikarnika is the another name of Rani Laxmi Bai queen of Jhansi.

She was one of the leading figures of the Indian Rebellion of 1857 and became a symbol of resistance to the British Raj for Indian nationalists.

Laxmi Bai born on November 19, 1835 in Kashi, India.

**L - Kheda Satyagraha**

In 1917 a Satyagraha movement organized by Mohandas Gandhi at Kheda district of Gujarat.

Gandhi organised this movement to support the peasants of Kheda district against the high taxes levied by British government.

It was the third Satyagraha movement after Champaran Satyagraha and Ahmedabad mill strike.

**M - Dadni System**

Dadni was used for the advance money given by the merchants to artisans for the required goods. Dadni system was the chief mode of business activities of the European merchants. In this system, long before the advent of season for a particular commodity, the merchants used to reach the actual cultivator or manufacturer through the local small agents or Paikars and advanced money to them so as to obtain the right for the purchase of a particular commodity.

**N - Gandhi - Das Pact**

To end the infighting within the Congress, a pact was signed between Gandhiji on one hand and Motilal Nehru and C.R. Das on the other whereby the Congress accepted that the Swarajists were in the Councils on the Congress's behalf. In return, the Swarajists agreed that only those who spun Khadi could be members of the Congress.

This pact is known as Gandhi Das pact .

**O - Dickie Bird Plan**

Mountbatten prepared a "Dickie Bird Plan" for India's independence.

The main proposal of this plan was to that provinces should become first independent successor states rather than an Indian Union or the two dominions of India & Pakistan.

Mountbatten cabled to England that this plan was cancelled. So it was also called as Plan Balkan.

## PART- B -6 Marks

### A - फिरोजशाह तुगलक के जनकल्याणकारी कार्यों का वर्णन कीजिए ?

फिरोजशाह तुगलक (1351–1388) ने मोहम्मद तुगलक से प्राप्त कड़वी विरासत को अपनी जनकल्याणकारी नीतियों से जनता को संतुष्ट करने का प्रयास किया। फिरोजशाह तुगलक के जनकल्याणकारी कार्य निम्नलिखित हैं:-

- आर्थिक वित्तीय सुधार हेतु उसने 24 प्रकार के कर समाप्त कर केवल चार प्रकार के कर जजिया, जकात, खम्ज, खिरात लागू किये।
- उसने 1/3 से 1/5 भाग लगान लिया भू-राजस्व का सर्वेक्षण करवाया जो 6 करोड़ 85 लाख टका वार्षिक था।
- फिरोजशाह तुगलक ने 1200 फलों के बाग लगवाये, पाँच बड़ी, नहरों का निर्माण कराया। यमुना नहर इन्हीं नहरों में से एक है।
- फिरोजशाह ने गरीब व अनाथों के लिए "दीवान-ए-खैरात" पेंशन के लिए "दिवान-ए-दास्तेहार" की स्थापना की।
- फिरोजशाह ने "दारुलशफा" नामक निःशुल्क चिकित्सालय गरीबों के लिए स्थापित किया।
- फिरोजशाह ने लगभग 300 नगरों की स्थापना की जैसे फिरोजपुर फिरोजाबाद और हिसार फिरोज आदि।
- फिरोजशाह ने प्राचीन भारतीय संस्कृति को समझने हेतु अनेक (लगभग 1300) संस्कृति ग्रंथों का अरबी, फारसी में अनुवाद कराया।

फिरोजशाह के इस प्रकार के जनहितकारी कार्यों के कारण हेनरी इलियट ने उसे "सल्तनत काल" का अकबर कहा है।

### B - अकबर की धार्मिक नीति को प्रभावित करने वाले कारकों का उल्लेख कीजिए ?

अकबर की धार्मिक नीति को प्रभावित करने वाले कारक

1. **विरासत का प्रभाव-** बारर एवं हुमायूँ दोनों ने अपने राजस्व में कभी-भी धर्म को प्रभावी नहीं होने दिया था। बाबर के विषय में कहा जाता था कि वह मध्य एशिया में कुल्ला (शिया टोपी) पहनकर घुमता था। उसी प्रकार अकबर के व्यक्तित्व पर उसके गुरु अब्दुल लतीफ व माता हमीदा बानों बेगम की उदारता का भी प्रभाव पड़ा। अब्दुल लतीफ की धार्मिक उदारता की आलोचना करते

### A - Describe the public welfare activities of Firoz Shah Tughlaq ?

Firoz Shah Tughlaq sat on the throne of Delhi at the age of 45 years.

After ascending the throne, he rolled back the administrative decisions taken by his predecessor. - He ruled according to the Shariat and abolished all the taxes which were unlawful as per Shariat.

Four kinds of taxes were imposed.

These taxes were Kharaj, Zakat, Jizya and Khams. In order to encourage agriculture, the Sultan paid a lot of attention to irrigation. Firoz repaired a number of canals and imposed Haque-i-Sharb i.e water tax.

he was a great builder the cities of Fatehabad Hisar, Jaunpur and Firozabad stand to his credit.

The Sultan established at Delhi a hospital described as Dar-ul-Shifa.

a new department of Diwan-i-Khairat was setup to make provisions for the marriage of poor girls.

However his rule was marked by peace and tranquility and the credit for it goes to prime minister Khan-i-Jahan Maqbul.

### B - Refer the factors affecting Akbar's religious policy ?

Akbar is seen as one of the greatest rulers of the Mughal dynasty in India and was celebrated for his liberal ideas and religious policies based on mutual understanding.

As a statesman, he realised that if he wanted his state to rest on a firm footing he should make himself the king not only of the Muslims who formed only a minority of the population in the country, but should enlist the sympathy and goodwill of all the sections of the people.

हुए कट्टर मुस्लिम जमात उसे शिया के देश में सुन्नी और सुन्नी के देश में शिया कहते थे। इस प्रकार अकबर को उदार एवं सहिष्णुता धार्मिक नीति अपनाने की प्रेरणा अपने पूर्वज बाबर, हुमायूँ, अब्दुल लतीफ, हमीदा बानों बेगम आदि से विरासत में मिली थी।

2. **तुर्को-मंगोल परम्परा का प्रभाव-** अकबर से पूर्व तुर्की शासक अलाउद्दीन खिलजी एवं मुहम्मद बिन तुगलक ने धर्म निरपेक्ष राजस्व सिद्धांत को अपनाया था। उसी प्रकार अकबर का रक्त संबंध मंगोलों से था तथा मंगोलों में यशा की परम्परा प्रचलित थी। 'यशा' परम्परा का आशय था- समस्त प्रकार के भेदभावों की अस्वीकृति। अतः अकबर की धार्मिक नीति पर तुर्को एवं मंगोलों की धर्मनिरपेक्ष परम्परा का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।
3. **बाल्यावस्था की पृष्ठभूमि का प्रभाव-** अकबर का जन्म राजपूत राज्य अमरकोट में हुआ था और यहीं उसका लालन-पालन राजपूत रिति रिवाजों एवं मान्यताओं के बीच हुआ। अतः अकबर की धार्मिक नीति पर उसकी बाल्यावस्था की पृष्ठभूमि से भी प्रभावित रही होगी।
4. **हिन्दू पत्नियों का प्रभाव-** अकबर ने कई हिन्दू राजघरानों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए। अकबर की हिन्दू पत्नियों की धार्मिक पत्नियों की धार्मिक मान्यताओं और विचारों का प्रभाव भी उसकी धार्मिक नीति पर पड़ा होगा।
5. **भक्ति एवं सूती आंदोलन का प्रभाव-** अकबर से पूर्व ही भक्ति एवं सूती संतों ने उदार धार्मिक नीति का प्रचार-प्रसार किया था। अतः इसका प्रभाव भी अकबर की धार्मिक नीति पर पड़ना स्वाभाविक था।
6. **अबुल फजल एवं फैजी का प्रभाव-** अकबर शेख मुबारक तथा उसके दो पुत्रों अब्दुल फजल एवं फैजी के सम्पर्क में रहा तथा इन्हें राजकीय संरक्षण प्रदान किया। इन तीनों के धार्मिक उदारता संबंधी विचारों ने भी अकबर की धार्मिक नीति को प्रभावित किया होगा।
7. **निजी विचार पद्धति का प्रभाव-** इतिहासकारों का एक वर्ग यह भी मानता है कि अकबर व्यक्तिगत रूप से भी अकबर उदार एवं सहिष्णु शासक था। परिणामस्वरूप उसने उदार एवं सहिष्णु धार्मिक नीति को अपनाया।

**C - रानी अवंतीबाई पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?**

“देवीय शक्ति थी, नाम था अवंन्तिबाई, वेलिंग्टन से युद्ध लड़ा और रामगढ़ की लाज बचाई”।

1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक महिलाओं ने अपने शौर्य एवं साहस से लोहा लिया। उनमें रानी

**- Influence of Bhakti movement:**

The 16th century when Akbar was born, brought up and lived was marked by a new awakening of broad-mindedness. So it was natural for Akbar to be influenced by contemporary ideas and values.

**- Influence of Scholars:**

Three great scholars and liberal minded Sufis i.e. Shaikh Mubark and his sons Faizl and Abdul Faizl exercise tremendous influence on the religious outlook of Akbar.

- In consonance with that policy, Akbar adopted a policy of universal religious toleration. He showed an equal amount of respect for all the religions in the country. He developed a belief that there was truth in every religion. Being a man of tolerant spirit, he placed no obstacles in the way of anybody worshipping God in any form and in any style whatsoever according to his belief.

And as a result he established Din-i-Illahi.

**C - Write a brief comment on Rani Avanti Bai?**

Born in 1831, Avanti Bai was married to King Vikramaditya Lodhi of Ramgarh (today in Mandla district of Madhya Pradesh) at an early age. Fiercely independent as a young girl, she was well-trained in

अवन्तीबाई का योगदान रहा।

इसका जन्म सिवनी जिले के मनकेड़ी गाँव में हुआ था इनका विवाह रामगढ़ रियासत के शासक विक्रमादित्य सिंह से हुआ।

भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में रानी अवन्तीबाई ने गढ़ मंडला से नेतृत्व किया। ब्रिटिश शासक की हड़प नीति के विरुद्ध अंग्रेजों से युद्ध किया।

अंग्रेज सेनापति वार्डन को खेती गाँव के युद्ध में पराजित किया। लेकिन दिसम्बर 1857 में अंग्रेज सेनापति वार्डन ने गढ़ मण्डला पर आक्रमण कर रामगढ़ के किले को घेर लिया।

रानी ने अपनी पराजय की आशंका से 20 मार्च 1858 को अपनी अंगरक्षिका गिरधारी बाई के साथ कटार घोपकर आत्महत्या कर ली। और मातृभूमि की रक्षा हेतु प्राण न्यौछावर कर दिये।

इनकी साहसीता के कारण म.प्र. सरकार ने रानी अवन्तीबाई सम्मान प्रारंभ किया साथ ही भोपाल में स्थित शहीद स्मारक में रानी की प्रतिमा स्थापित की गई।

“ रानी दुर्गा की परम्परा की लाज बचाई अवन्ती ने और रामगढ़ की सेना ने साथ दिया क्रांति में।”

ऐसी विरांगना को शत-शत नमन।

**D - आर्यसमाज का सामाजिक तथा धार्मिक योगदान को समझाइयें ?**

**आर्य समाज—**

- 1875 में दयानंद सरस्वती ने बंबई में आर्य समाज की स्थापना की। 1877 में आर्य समाज का मुख्यालय लाहौर में स्थापित किया गया।
- आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य— हिंदू धर्म में व्याप्त दोषों को उजागर कर उसे दूर करना, वैदिक धर्म को पुनः शुद्ध रूप में स्थापित करना, भारत को सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक रूप से एक सूत्र में बांधना था।
- दयानंद सरस्वती ने 'वेदों की ओर लौटो' का नारा देते हुए, वेदों को भारत का आधार स्तंभ बताया। उनका विश्वास था कि हिंदू धर्म व वेद, जिन पर भारत का पुरातन समाज टिका है, वे शाश्वत, अपरिवर्तनशील, धर्मातीत तथा दैवीय हैं।
- दयानंद ने पुराणों जैसे हिंदू धर्म ग्रंथों की प्रामाणिकता

sword fighting, archery, cavalry, military strategy, diplomacy and all other subjects of statecraft.

When Vikramaditya Singh, the ruler of Ramgarh State died leaving behind his wife Avantibai and no heir to the throne, the British put the state under court administration. Avantibai vowed to win back her land from the British. She raised an army of four thousand men and led it herself against the British in 1857. A fierce battle ensued and Avantibai fought most valiantly but could not hold out for long against the superior strength of the British army. When her defeat becomes imminent she killed herself with her own sword and became a martyr on 20-03-1858.

She is remembered for her valiant fight against the British during the 1857 uprising for Independence.

**D - Explain the social and religious contribution of Arya Samaj?**

Maharishi Dayanand Saraswati founded the Arya Samaj in Mumbai on 12th April 1875. From an awareness platform like Arya Samaj, he called for the elimination of hypocrisy in the name of religion and along with the liberation of the homeland with foreign slaves from slavery. The Arya Samaj is an organization based on Vedic religion, which weighs on religion, the interpretation of lawlessness on the tone of the argument.

This movement started to improve Hinduism in response to Western influences. Arya Samaj believed in pure Vedic tradition and rejected idol worship, incarnation, sacrifice, false rituals and superstitious beliefs. It was opposed to practice untouchability and caste discrimination. Untouchable and women were also given the right to wear sacrificial rites and read Vedas.

को अस्वीकार किया। वर्ण व्यवस्था के स्थान पर उन्होंने कर्म के आधार को समर्थन दिया। सामाजिक व शैक्षिक मामलों में स्त्री-पुरुष के समान अधिकारों की वकालत की।

- आर्य सामाजियों ने छुआछूत, जातिभेद, बाल-विवाह का विरोध किया तथा कुछ शर्तों के साथ विधवा पुनर्विवाह की अनुमति व अंतर्जातीय विवाह का समर्थन किया।
- आर्य समाज द्वारा चलाया गया 'शुद्धि आंदोलन' काफी विवादास्पद रहा। इसके अंतर्गत किसी कारणवश अन्य धर्म अपनाने वाले हिंदुओं को पुनः हिंदू धर्म में वापसी के लिए प्रोत्साहित किया गया।
- 'स्वदेशी व हिंदी' का समर्थन करने वाला यह प्रथम संगठन था। इसका मानना था कि "भारत भारतीयों के लिए है।"
- दयानंद सरस्वती ने 'गो रक्षा आंदोलन' चलाया। गायों की रक्षा हेतु 'गो रक्षा समिति' की स्थापना की।
- दयानंद सरस्वती ऐसे प्रथम समाज सुधारक थे, जिन्होंने शूद्रों व स्त्री को वेद पढ़ने, उच्च शिक्षा प्राप्त करने, यज्ञोपवीत धारण करने के पक्ष में आंदोलन चलाया।
- 1863 में उन्होंने बाह्य आंडबरों और झूठे धर्मों का खंडन करते हुए 'पाखंड-खंडिनी पताका' लहराया। दयानंद सरस्वती के विचार उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में वर्णित हैं।

#### E - मध्यप्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों का संक्षेप में विवरण कीजिए ?

भारत के मध्य में स्थित राज्य मध्यप्रदेश को भारत की हृदय स्थली का गौरव प्राप्त है। पर्यटकों के लिए मध्य प्रदेश में प्रकृति ने अपना नैसर्गिक सौंदर्य बिखेरा है— म.प्र. पर्यटन विकास निगम द्वारा राज्य में 382 पर्यटन केन्द्रों को निहित किया है, जिसमें से 20 पर्यटन केन्द्र अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है।

#### माण्डू (माण्डव) -

- म.प्र. के धार जिले में स्थित है 1405 ई. में हुशंगशाह ने इसको राजधानी बनाया।

स्थल— जहाज महल, हिण्डोला महल, रानीरूपमती महल, होशंगशाह ने इसको राजधानी बनाया।

#### खजुराहो—

- विश्वविख्यात, यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल स्थल है।

स्थल— कंदरिया महादेव, चित्रगुप्त, लक्ष्मण, पार्श्वनाथ

The text "Satyarth Prakash", compiled by Swami Dayanand Saraswati, is the original text of Arya Samaj.

We can conclude that Arya Samaj paved a way for social and religious reform in the 18th century.

#### E - Briefly describe the major tourist destinations of Madhya Pradesh?

Madhya Pradesh – the heart of India – is known for its regal forts, breathtaking topography, exhilarating wildlife, caves, and temples. There are a lot of places to visit in Madhya Pradesh that satiate the travelers' instinct.

#### 1. Natural Environment -

One half of the state is forested and offers a unique panorama of wildlife. In the National Parks of Kanha, Bandhavgarh, Shivpuri and many others visitors have the opportunity to see the tiger, the bison and a wide variety of deer and antelope in natural surroundings.

#### 2. World Heritage Site -

Three sites in Madhya Pradesh have been declared World Heritage Sites by UNESCO:

The Khajuraho Group of Monuments (1986)

Buddhist Monuments at Sanchi (1989)

आदि मंदिर है।

- इनका निर्माण चंदेल वंश के शासकों ने 950–1050 ई. के मध्य करवाया था।

#### साँची—

- एकमात्र ऐसा स्थल, जहाँ बौद्ध स्तूप है लेकिन महात्मा बुद्ध वहाँ कभी नहीं गए।
- रायसेन जिले के साँची में स्थित इनका निर्माण सम्राट अशोक ने करवाया था।

स्थल— चेतियगिरि, अन्य स्तूप, वेदिसंगिति आदि

#### पंचमढ़ी—

- पर्यटकों का स्वर्ग उपनाम से प्रसिद्ध यह प्रदेश का एकमात्र हिल स्टेशन है।

स्थल— अप्सरा विहार, धूपगढ़, प्रियदर्शनी प्वाइंट आदि।

#### अन्य पर्यटन स्थल—

- औरछा : निवाड़ी जिले में स्थित है।
- महेश्वर : खरगौन जिले में नर्मदा के तट पर स्थित।
- उज्जैन, मैहर, ओंकारेश्वर आदि।

#### F- 1857 ई. के विद्रोह के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए ? विद्रोह का स्वरूप

- 1857 ई. के विद्रोह का स्वरूप निर्धारण आधुनिक भारत के इतिहास लेखन की प्रमुख समस्या रही है। इसका कारण है कि इसके अध्ययन के लिए पर्याप्त सामग्री का अभाव वस्तुतः बहुत से विद्रोहियों ने पकड़े जाने के भय से कागजातों को पहले ही नष्ट कर दिया।
- ब्रिटिश इतिहासकारों में लॉरेन्स, सीले व होम्ज ने इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है। वहीं आऊट्रम व टेलर इसे हिन्दू-मुस्लिम षडयंत्र का परिणाम मानते हैं, जबकि होम्ज ने इसे बर्बरता व सभ्यता के बीच युद्ध तथा रीज ने इसे धर्मान्धों का ईसाइयों के विरुद्ध युद्ध कहा है। वास्तव में इन लेखकों का उद्देश्य यह सिद्ध करना था कि इस विद्रोह का मुख्य कारण ब्रिटिश सरकार की दोषपूर्ण नीतियां नहीं, बल्कि सैन्य संगठन में निहित कतिपय दोष थे, जिन्हें दूर करने से विद्रोह की संभावना को समाप्त किया जा सकता था चूंकि यह केवल सैनिकों के द्वारा किया गया विद्रोह था तथा इसमें जनसाधारण का कोई योगदान नहीं था, अतः इसे आसानी से कूचला जा सका।
- इसके विपरीत वी.डी. सावरकर ने इसे सुनियोजित 'स्वतंत्रता संग्राम', जबकि बेन्जामिन डिजरेली व अशोक मेहता ने इसे राष्ट्रीय विद्रोह माना है। परन्तु इस मत

The Rock Shelters of Bhimbetka (2003)

#### 3. National Park -

Madhya Pradesh is home to several National Parks, including:

Bandhavgarh National Park ,Kanha National Park  
Satpura National Park ,Sanjay National Park  
Madhav National Park,Panna National Park

#### Pench National Park.

4. Some other beautiful sites to visit are Mandu (city of joy) , Gwalior Fort , Gujar Mahal etc.

5. Many famous and ancient caves are located in M.P some of them are - Udayagiri caves, Bagh Caves , Pachmarhi Caves , Caves of Shankaracharya.

6. M.P is also the home of hundreds of fair and festivals. Some prominent one are Peer Budhan Fair, Sant Singaji Fair , Bhagoriya Mela etc.

#### F- Explain the nature of the rebellion of 1857 AD?

There are two major views regarding the nature of the Revolt of 1857. The British historians have treated the great uprising of 1857 as a sepoy mutiny. On the other hand, the staunch patriotic and nationalist Indian writers & historians regard the Revolt of 1857 as the First War of Indian Independence.

Most of the British historians describe the events of 1857 -1858, as a mutiny by the sepoys. By looking closely, we can see that to term the revolt of 1857 as a sepoy mutiny was rather a British propaganda. It is true that the revolt was started by the sepoys but was joined in large numbers by the civilian population. The participation of peasants and artisans made the revolt a widespread and popular event. In some areas, the common people revolted even before the sepoys. All this shows that it was clearly a popular revolt.

The debate over the nature of 1857 continues to rage mainly because of its unique position in Indian history It was not only the first widespread resistance to British rule but it also brought about fundamental changes in the relations between the rulers and the ruled. And since the aim of the revolt was to overthrow alien rule, we discern in it an unconscious

को भी स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि 1857 के विद्रोह का विस्तार बंगाल, पंजाब, दक्षिण भारत आदि क्षेत्रों में नहीं था और न ही विद्रोह के नेता राष्ट्रीय नेता थे। बहादुरशाह कोई सम्राट नहीं था, उसे सैनिकों ने अपना नेता बनने पर विवश किया था। नानासाहेब ने उस समय झंडा उठाया, जब उनका दूत लंदन से उनके लिए पेंशन प्राप्त करने में असफल रहा।

- झांसी का झगड़ा उत्तराधिकार और विलय के प्रश्न पर हुआ। इसमें संदेह नहीं कि रानी वीरगति को प्राप्त हुई, परन्तु उसने यह स्पष्ट नहीं किया कि वह राष्ट्रहित के लिए लड़ रही थी। अवध का नवाब, जो एक बेकार-सा व्यभिचारी व्यक्ति था, राष्ट्रीय नेता का रूप कभी नहीं ले सकता था। अवध के ताल्लुकदारों ने सामन्तशाही अधिकारों के लिए अथवा अपने राजा के लिए युद्ध किया, राष्ट्रीय हित के लिए नहीं।
- इसका वास्तविक स्वरूप कुछ भी क्यों न हो। शीघ्र ही यह भारत में अंग्रेजी सत्ता के लिए एक चुनौती का प्रतीक बन गया। अंग्रेजी दासता से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए लड़ते हुए जन्म ले रहे भारतीय राष्ट्रवाद के लिए, यह एक चमकता हुआ उदाहरण था। इसे अंग्रेजों के विरुद्ध राष्ट्रीय स्वतंत्रता युद्ध का पूर्ण यश प्राप्त हुआ।

#### G - मध्यप्रदेश के खजुराहों के मंदिरों की विशेषताओं को रेखांकित करें।

मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित खजुराहों मंदिर भारतीय स्थापत्य एवं शिल्पकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। नागरशैली में निर्मित इन मंदिरों का निर्माण 10 वीं और 11 वीं शताब्दी के मध्य चंदेल शासकों द्वारा करवाया गया था। उस समय 85 मंदिरों का निर्माण किया गया था परन्तु वर्तमान में 22 मंदिर ही अस्तित्व में हैं। वर्ष 1986 में खजुराहों के मंदिरों को विश्व धरोहर घोषित किया गया तथा वर्ष 2009 में भारत के 7 आश्चर्यों में सम्मिलित किया गया है। खजुराहों को पत्थर पर तराशी गई नगरी भी कहा जाता है। यहाँ के मंदिरों को तीन समूहों में बाँटा गया है—

- खजुराहों मंदिर— पश्चिमी समूह, पूर्वी समूह, दक्षिण समूह।
- **पश्चिमी समूह** : इस समूह में सर्वाधिक मंदिरों की संख्या है, जिसमें कन्दरिया महादेव मंदिर, चौंसठ योगिनी मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, लक्ष्मण मंदिर तथा मंतगेश्वर मंदिर आदि प्रमुख हैं।
- **पूर्वी समूह** : इस समूह में पार्श्वनाथ मंदिर, घटाई

and sudden manifestation of national feeling or sentiment.

Thus we can say that, the revolt of 1857 definitely had some seeds of nationalism and anti-imperialism.

#### G - Outline the characteristics of the temples of Khajuraho in Madhya Pradesh.

Khajuraho Temples are among the most beautiful medieval monuments in the country.

- It is a group of Hindu and Jain Temples in Madhya Pradesh built by Chandela Dynasty between 950 and 1050 AD.

- Located at Khajuraho, Chhatarpur district, Madhya Pradesh, India.
- These Temples got the status of UNESCO's World Heritage Sites in 1986.
- The temples are famous for their nagara-style architectural symbolism and their erotic sculptures (about 10% of total sculptures).
- The temples at Khajuraho are all made of Sandstone.
- The largest temple at Khajuraho is the Kandariya Mahadeva temple.
- All the towers or shikhara of temple rise high, upward in curved pyramidal fashion, emphasizing temple's vertical thrust ending in horizontal fluted disc called Amalaka topped with Kalasha or vase.

मंदिर, आदिनाथ मंदिर आदि प्रमुख हैं।

- **दक्षिणी समूह** : इस समूह में दुल्हादेव मंदिर व चतुर्भुज मंदिर आदि सम्मिलित हैं।

#### कन्दारिया महादेव मंदिर

- खजुराहों का सबसे विशाल मंदिर कन्दारिया महादेव का मंदिर है, जो भगवान शिव को समर्पित है। इसका निर्माण चंदेल शासक विद्याधर ने करवाया था।

#### चौंसठ यौगिनी मंदिर

- यह ग्रनाइट पत्थरों से निर्मित खजुराहों का सबसे प्राचीन मंदिर है।

#### विश्वनाथ मंदिर

- पंचायतन शैली से निर्मित विश्वनाथ मंदिर का निर्माण राजा धंगदेव वर्मन ने 1002-1003 ई. में करवाया था, जो भगवान शिव को समर्पित है। इस मंदिर की लम्बाई 89 फुट तथा चौड़ाई 45 फुट है।

#### पार्श्वनाथ मंदिर

- यह पूर्व समूह में पंचरथ शैली से निर्मित जैन मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण 950 ई. से 980 ई. के मध्य राजा यशोवर्मन के उत्तराधिकारी राजा धंग के शासन काल में हुआ था।

#### H - शेरशाह का एक शासक के रूप में मूल्यांकन करें।

- शेरशाह सूरी के बचपन का नाम फरीद खॉ था। यह बिहार के सूबेदार बहार खॉ लोहानी के यहाँ नियुक्त था, शेर को मार डालने पर लोहानी ने उसे 'शेर खॉ' की उपाधि दी।
- 1539 ई. में शेर खां ने चौसा के युद्ध में मुगलशासक हुआयूँ को पराजित किया। और शेरशाह की उपाधि धारण की।
- 1540 ई. में कन्नौज के युद्ध में विजय के उपरान्त सुल्तान/बादशाह की उपाधि धारण की तथा दिल्ली व आगरा का शासक बना।
- 1543 ई. का रायसेन अभियान उसके चरित्र पर कलंक है।
- इसका प्रशासन केन्द्रीयकृत प्रशासन था प्रान्तीय एवं सरकार, परगना तथा ग्राम का प्रशासन की इकाई थी।
- इसका साम्राज्य 63 सरकारों में विभाजित था।
- भू-राजस्व में भूमि की माप इकाई तथा गज ए-सिकन्दरी का प्रयोग किया है। सैन्य सुधारों में शेरशाह ले हुलिया एवं दाग प्रणाली का पुनः प्रारंभ किया।
- निर्माण कार्यों में ग्रॉड ट्रंक रोड एवं सासाराम का मकबरा आदि का निर्माण कराया।

- The erotic expression of sculptures in these temples gives equal importance in human experience as a spiritual pursuit, and it is seen as a part of the larger cosmic whole.

- According to local estimates there are 85 temples in Khajuraho out of which only 25 temples are standing after various stages of preservation and care.

#### H - Analyze Sher Shah as a ruler.

Sher Shah Suri was benevolent ruler and was one of the greatest administrators of medieval India. He introduced many reforms and on that basis Akbar built a superstructure of Mughal administration.

1. He divided his whole empire into 47 divisions called 'Sarkars' and these were again subdivided into smaller administrative units called 'Parganas'.
2. He established four main central departments: Diwan-i-wijarat (Finance Department); Diwan-i-arz (Military Department); Diwan-i-insha (Royal Secretariat); and Diwan-i-Risalat (Department for religious and foreign affairs).
3. He introduced a system of tri-metalism which came to characterise Mughal coinage (Silver coin) which was called 'Rupia'.
4. Todar mal Khatri, prior to become a celebrity under the reigns of Akbar as Raja Todar Mal was groomed in Sher Shah's administration.
5. Jagir system was discouraged and a new arrangement Qabuliyat was introduced. Qabuliyat was a deed of agreement between the peasant and government.
6. A major road running across the Gangetic plain was built by Sher Shah for administrative and military reasons. This "Sadak-i-Azam" was the precursor of

- इसने अपने साम्राज्य में अशर्फी रूपया, तथा दाम सिक्कों को चलाया गया।
- इस प्रकार कहा जा सकता है कि शेरशाह ने अपनी बुद्धि और बल से न केवल सूरी साम्राज्य की स्थापना कि बल्कि एक उत्कृष्ट शासक, महान योद्धा और निर्माता भी साबित किया।

### I - मध्यप्रदेश की शिल्पकला की विशेषताओं पर प्रकाश डालें ?

#### मध्यप्रदेश में शिल्पकला

- **मिट्टी शिल्प**— संस्कृति एवं सभ्यता के विकास में मृत्तिका मिश्रण का विशिष्ट योगदान रहा है। मानव जाति द्वारा प्राचीन काल से मिट्टी के शिल्प बनाये जा रहे हैं। मध्यप्रदेश में धार, झाबुआ, रीवा, शहडोल, बैतूल, मण्डला क्षेत्रों में मिट्टी के खिलौने, मूर्तियाँ आदि बनाये जाते हैं।
- **काष्ठ शिल्प**— प्राचीन काल से ही मध्यप्रदेश काष्ठ शिल्प परम्परा में समृद्ध रहा है। इसमें मुख्यतः गाड़ी के पहिये, घरों के दरवाजे, मुखौटे आदि बनाये जाते हैं। प्रदेश के मण्डला, बैतूल, होशंगाबाद, धार, झाबुआ क्षेत्र में जनजातीया काष्ठ शिल्प की परम्परा है।
- **धातु शिल्प**— मध्यप्रदेश में कई प्रकार के धातु शिल्प बनाये जाते हैं। प्रारंभ में धातु का प्रयोग केवल बर्तनों एवं आभूषणों तक सीमित था परन्तु बाद में टीकमगढ़ और बैतूल के धातु शिल्पकारों ने अपनी कलाकृति में देवी-देवताओं का सुन्दर अलंकरण किया है।
- प्रदेश के सतना जिले के उचेहरा क्षेत्र में काँसे के बटहोली नामक प्रसिद्ध पात्र बनाये जाते हैं तथा नरसिंहपुर जिले के चीचली में पीतल एवं ताँबे से कलात्मक वस्तुएँ बनाई जाती है।
- **बाँस शिल्प**— प्रदेश में झाबुआ एवं मण्डला क्षेत्र की विभिन्न जनजातियों द्वारा बाँस की कलात्मक वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।
- **कंधी कला**— प्रदेश की जनजातियों में कंधिया अलंकरण एवं भित्ति चित्र प्रसिद्ध हैं। राज्य की बंजारा जनजाति द्वारा कंधी बनाने का कार्य किया जाता है। इसके प्रमुख केन्द्र रतलाम, नीमच एवं उज्जैन हैं।
- **प्रस्तर शिल्प**— राज्य में प्रस्तर शिल्प का प्रमुख उदाहरण पत्थरों पर नक्काशी करना है। मंदसौर तथा रतलाम की गुज्जर, गायरी एवं भील जनजातियों द्वारा पत्थरों पर नक्काशी की जाती है।

the Grand Trunk Road. This Road was initially built by Sher Shah to connect Agra to Sasaram, that was his hometown.

He was very able ruler and provided a strong base for development to upcoming rulers.

### I - Illustrate the features of sculpture of Madhya Pradesh?

#### Sculpture in the Madhya Pradesh

**Ceramics** - Ceremonial research has been a significant contributor to the development of culture and civilization. Ceramics are being made from ancient times by human beings. In Madhya Pradesh, clay toys, urinals etc. are made in Dhar, Jhabua, Rewa, Shahdol, Betul, Mandla areas.

**Wood crafts**- Since ancient times, Madhya Pradesh has been rich in wood crafts. Mainly, carriage wheels, house door, masks etc. are made. In the Mandla, Betul, Hoshangabad, Dhar, Jhabua region, the tribe is involved in a tradition of wood crafts.

**Metal crafts**- Many types of metal crafts are made in Madhya Pradesh. Initially, the use of metal was limited to pottery and ornaments, but later, metal craftsmen of Tikamgarh and Betul had decorated the goddesses of Deities in their artwork.

In the Uchehra area of the Satna district of the state, a famous character named Kanti Butholi is made and artistic items are made from brass and copper in the chisel in Narsinghpur district.

**Bamboo Craft** - Bamboo artifacts are manufactured by different tribes of Jhabua and Mandla area in the state.

**Comb Art** - Kangiya Erlation and murals are famous among tribal. Banjara tribe is used to make comb. Its main centers are Ratlam, Nimach and Ujjain.

**Stone Craft** - The main example of stone crafts in the state is carving on stones. Stones are carved by Gujjar, Gayri and Dind tribes of Mandsaur and Ratlam.

**J - उग्रवादियों (1905-1918) का मूल्यांकन कीजिए ?**

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1885-1905) की बागडोर कांग्रेस के उदारवादी दल के हाथों में थी, 1905 ई. से कांग्रेस का दूसरा चरण प्रारंभ हुआ जिसे उग्रवादी युग कहा गया।

- इस दल के प्रमुख नेता बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिनचन्द्रपाल एवं अरविन्द घोष प्रमुख थे।
- ये युवा वर्ग अंग्रेजों से जल्द से जल्द स्वराज एवं स्वतंत्रता चाहता था इस वर्ग ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आंदोलन एवं बहिष्कार किया, साथ ही सरकार पर दबाव बना रहे थे।
- उग्रवादी भले ही अपने उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकें लेकिन राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया।  
इन्होंने जनता में आत्म बलिदान एवं देश प्रेम की भावना का विकास किया। इस चरण ने गांधी युग के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त किया, जो स्वतंत्रता के लिए आवश्यक था।
- उदारवादियों ने धार्मिक प्रतीकों पर बल दिया जैसे तिलक ने शिवाजी महोत्सव, गणेश महोत्सव, इनका विश्वास था कि भारतीयों की मुक्ति स्वयं के प्रयत्नों से होगी, अंग्रेजों की कृपा से नहीं।

**J - Evaluate Extremist (1905 -1918).**

The period from 1905 was known as the era of extremism in the Indian National Movement. The extremists or the aggressive nationalists believed that success could be achieved through bold means and not through petitions.

The important extremist leaders were Lala Lajpat Rai, Bal Gangadhar Tilak, Bipin Chandra Pal and Aurobindo Ghosh.

1. Demand of Swaraj: They were the first to demand Swaraj as a matter of birth right. The Home Rule Movement had brought a new life in the national movement.
2. Mass movement: They involved the masses in the freedom struggle and broadened the social base of the National Movement e.g. Swadeshi movement. This movement helped to build indigenous industry base in India.
3. Spread of national education: The extremist tried to rope in the students in their movements and encouraged them to withdraw from government colleges and join the national Universities which were independent of government control.
4. Nationalism: The extremist had no faith in the British sense of justice, or fair play. They believed that the Britishers had conquered India for selfish end and would continue to govern India for similar ends. So they promoted a sense of Nationalism.

Although their work was not aligned with the ideologies of some freedom fighters like Gandhi but definitely this phase filled the feeling of patriotism among the young population which collectively led to the independence of India.

**K - रैयतवाड़ी व्यवस्था ने कृषकों को किस प्रकार प्रभावित किया ? वर्णन कीजिए।**

**रैयतवाड़ी व्यवस्था**— यह व्यवस्था मुख्यतः मद्रास एवं बाम्बे प्रेसीडेन्सी में लागू की गई थी यह व्यवस्था 1792 ई. कर्नलरिड द्वारा एवं 1820 एवं 1825 में मुनरो तथा एल्किस्टन के द्वारा मद्रास एवं बॉम्बे प्रेसीडेन्सी में लागू किया गया।

इस व्यवस्था में भूमि का स्वामित्व कृषकों को दिया गया।

**प्रभाव**

**सकारात्मक**

**K - How did the Ryotwari system affect the peasants? Describe it.**

Ryotwari System was introduced by Thomas Munro in 1820. Major areas of introduction include Madras, Bombay, parts of Assam and Coorgh provinces of British India. In Ryotwari System the ownership rights were handed over to the peasants. British Government collected taxes directly from the peasants. The revenue rates of Ryotwari System were 50% where the lands were dry and 60% in irrigated land.

**Impact of Ryotwari system on Indian Peasants**

- इस व्यवस्था में भूमि का क्रय-विक्रय कृषक कर सकते थे।
- भू-राजस्व का प्रबंधन अस्थायी रूप से 10-40 वर्षों के लिए किया गया था।
- भू-राजस्व का निर्धारण उत्पादक शक्ति के आधार पर किया गया था।
- सरकार एवं रैयतों के मध्य प्रत्यक्ष संबंध स्थापित हुये।

#### नकारात्मक

- बाद में कृषकों से भू-राजस्व अनुमान के आधार पर निश्चित किया।
- भू-राजस्व की राशि बहुत अधिक (50-60%) निर्धारित की।
- भू-राजस्व प्रायः नकद में वसूला गया।
- नकदी फसलों हेतु विवश किया गया जिससे खाद्यन्न की मात्रा कम हो गई।

इस व्यवस्था से कृषकों का शोषण हुआ। साथ ही इस व्यवस्था, से ब्रिटिश अपने उद्देश्य को भी प्राप्त करने में असफल रहे।

#### L - शाहजहाँ के काल में स्थापत्य कला के विकास का वर्णन कीजिए ?

स्थापत्य कला के क्षेत्र में मुगलों ने विशिष्ट योगदान दिया है, उसी क्रम में शाहजहाँ के समय मुगल स्थापत्य कला का स्वर्ण युग था।

- शाहजहाँ ने सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना की।
- शाहजहाँ के काल में मेहराब, गुम्बद, मीनार, बुज सभी का निर्माण किया गया।

#### स्थान

##### ताजमहल

- शाहजहाँ एवं मुगल काल की प्रसिद्ध ईमारत है।
- यह इमारत 1631-53 ई. के बीच, बेगम अर्जुमंद बानों की याद में बनवायी गयी थी।

##### लालकिला-

- 1648 ई. में लाल बलुआ पत्थर से, इस किले का निर्माण, दिल्ली में करवाया गया था।

##### आगरा-

- आगरा में दीवाने आम खास तथा आगरा के किले में मोती मस्जिद निर्मित की गई।

##### दिल्ली-

- दिल्ली स्थित शाहजहाँ नामक नगर बसाया।
- दिल्ली में लाल किले के अन्दर रंगमहल, हीरा महल,

Peasants were required to pay the revenue directly to the Company. They were free to sell or transfer their lands. But the system failed to protect the interest of the ryats. The rate of revenue was too high and the method of collection inflexible; the peasants were forced to take loans from money-lenders which made the latter exploit them.

Due to the very high taxes, farmers resorted to growing cash crops instead of food crops. This led to food insecurity and even famines.

Bonded labour arose because loans were given to farmers/labourers who could not pay it back.

#### L - Describe the development of architecture in the time of Shah Jahan?

On account of the intense interest taken and vigorous efforts made in raising magnificent and spacious buildings by Shah Jahan the Mughal period in general and his period in specific came to be known as the golden period of Indian architecture.

His major architectural development are -

##### 1. Taj Mahal (Agra):

“By its perfect proportions, luminous beauty, milk-white texture assuming different tones at different times, delicacy and variety of ornamentation, flawless execution of structure and by its picturesque setting, the Taj Mahal stands as a creation of superb beauty and magnificence in Indian architecture.”

##### 2. Moti Masjid:

Moti Masjid or Pearl Mosque at Agra is regarded as “the purest and novelist house of prayer.” The mosque was built at a cost of Rs. 30 lakhs.

##### 3. Jama Masjid:

Jama Masjid built at Delhi was constructed with red stone for the use of the royal family. High towers and domes are its special characteristics.

##### 4. Red Fort and some important buildings in it:

In the fort among the important buildings are ‘Diwan-Khas’, the ‘Rang Mahal, Nahar Bahishit’ and Diwan-

दीवान-ए-आग, दीवान-ए-खास अनेक महल बनवायें।

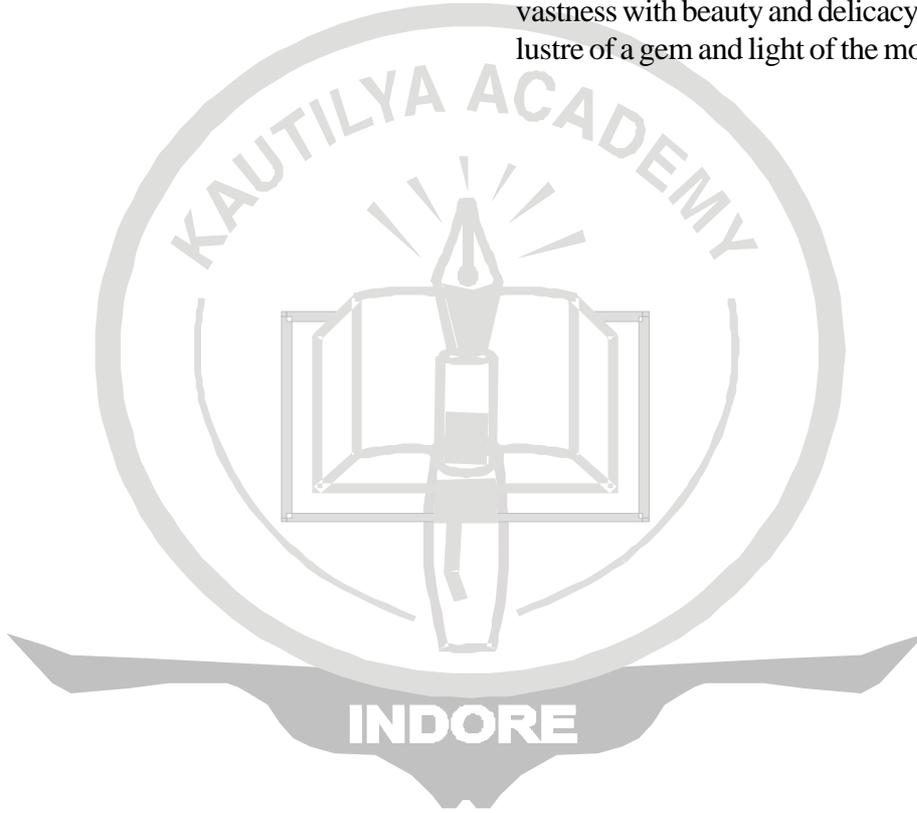
i-am'. The famous Persian poet Firdausi has said about the beauty of 'Diwan- i-khas'.

5. **'Takht-i-Tahus'. (Peacock Throne):**

This throne, a celebrated work of art was used for sitting in the court by Shah Jahan. The throne had an enamelled canopy supported by 12 pillars, each of which bore two peacocks inlaid with gems.

6. **Gardens:**

Shah Jahan was equally interested in gardens. Some of the famous gardens laid out by him are the Wazir Bagh in Kashmir, Shalimar Gardens near Lahore, the Talkatora Bagh and Shalimar Gardens at Delhi. Shah Jahan's buildings combine firmness and vastness with beauty and delicacy. They possess the lustre of a gem and light of the moon.



## PART- A 15 Marks

### A - अकबर के राजनैतिक अभियानों का वर्णन कीजिए ?

मुगल बादशाह अकबर ने साम्राज्य के विस्तार एवं सुरक्षा के लिए, अनेक अभियान एवं युद्ध किये हैं।

मुगल सम्राट अकबर (1556–1605) ई. तक शासन किया, जिसमें कुछ प्रमुख राजनैतिक अभियान अधोलिखित हैं—

#### राजनैतिक अभियान

मालवा— 1561–62 ई. में मालवा शासक बाजबहादुर के विरुद्ध आक्रमण किया। जिसमें बाजबाहदुर को पराजित कर अपार धन लूटा गया।

#### आमेर एवं मेड़ता—

- आमेर के राजा भार मल ने राजपूत शासकों में सबसे पहले अकबर की अधीनता स्वीकार की।
- 1562 ई. में मेड़ता के दुर्ग पर अकबर ने अधिकार कर लिया, यह दुर्ग एक जागीरदार जयमल राठौर के हाथ में था।

#### गढ़कटंगा— (गोंडवाना)— 1564

- मध्यभारत में एक स्वतंत्र राज्य था जिस पर रानीदुर्गावती के संरक्षण में उसके अल्पायु पुत्र वीरनारायण का शासन था।
- यह अभियान आसक खॉ के नेतृत्व में शुरू हुआ।
- 1564 ई. में दुर्गावती को युद्ध में पराजित कर दिया गया।

#### मेवाड़ — (1567–68 ई.)

- 1567 ई. में अकबर ने स्वयं मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ का अभियान किया।
- इस अभियान में अकबर ने 'जेहाद' का नारा देना पड़ा।
- 1568 ई. में चित्तौड़ पर मुगलों द्वारा अधिकार कर लिया गया।

#### कालिंजर (1569 ई.)

- यहाँ बघेल राजा रामचन्द्र का शासन था। उसने इसे मुगलों को सौंप दिया।

#### रणथंभौर (1569 ई.)

- यहां सुरजनराय का शासन था।
- अकबर ने मानसिंह को समझौते के लिए भेजा। मारवाड़, बीकानेर एवं जैसलमेर (1570)
- मारवाड़ बीकानेर एवं जैसलमेर के शासक क्रमशः चंद्रसेन, कल्याणमल एवं हरराय ने अकबर की अधीनता स्वीकार की।

#### हल्दीघाटी का युद्ध (1576 ई.)—

### A - Describe Akbar's political campaigns?

The advent of the Mughal rule in India brought in rich culture and ethical changes. The history of Akbar dates down to the 16th century AD. He ruled India from 1556 to 1605 AD. Akbar succeeded his father, Humayun, under a regent, Bairam Khan, who helped the young emperor expand and consolidate Mughal domains in India. A strong personality and a successful general, Akbar gradually enlarged the Mughal Empire to include nearly all of the Indian Subcontinent north of the Godavari river.

#### Military campaigns -

Akbar had a record of an unbeaten military campaigns that consolidated Mughal rule in the Indian subcontinent.

In 1556-1570 Akbar became independent of the regent Bairam Khan and other members of his domestic staff. Military campaigns were launched against the Suris and other Afghans and other kingdoms of Malwa and Gondwana.

In 1568 he seized the sisodiya capital of Chittor and in 1569 Ranthambore.

In 1570-1585 He led military campaigns in Gujarat followed by Bengal, Bihar and Orissa.

In 1585- 1605 saw expansion of Akbar's empire. Campaigns were launched in the north-west.

Kandahar was seized, Kashmir was annexed. Campaigns in the Deccan started and Berar, Khandesh and parts of Ahmadnagar were annexed.

Akbar was known for his very able ruling techniques, He had a fondness to gather knowledge from everyone that he met. His humbleness was his strongest point in dealing with his subjects. The Centralized Federal Government, a form of governance wherein the task was to delegate offices to governors of different states.

Akbar made many religious matrimonial alliances through which he sent a message of unity and togetherness.

To strengthen his belief in the oneness of all Akbar propounded the principle of Din Ai Elahi, through

- 1576 ई. में हल्दीघाटी की लड़ाई महाराणा प्रताप एवं मुगल सेना के मध्य हुआ।
- मुगल सेना का नेतृत्व, आसफ खॉ एवं मानसिंह ..... किया।

### गुजरात विजय- (1572-73 ई.)

- अकबर ने 1572 ई. में गुजरात अभियान किया।
- गुजरात का शासन मुजफ्फर शाह तृतीय था।
- अकबर ने गुजरात विजय के उपलक्ष्य में फतेहपुर सीकरी में बुलंद दरवाजा बनवाया था।
- अकबर ने पहली बार खंभात में समुद्र को देखा और पुर्तगालियों से मुलाकात की।

### उत्तर-पश्चिम की विजय-

- अकबर ने काबुल के शासक हकीम मिर्जा को पराजित किया।

### कश्मीर की विजय (1585-86 ई.)

- 1585-86 ई. में अकबर ने कश्मीर को विजित किया। वहां के राजा युसूफ खां को पराजित किया।

### भट्टा (सिंध) की विजय (1591 ई.)-

- भट्टा उत्तर-पश्चिम क्षेत्र का स्वतंत्र राज्य था। अकबर ने अब्दुरहीम खानखाना को मुल्तान का गवर्नर नियुक्त किया और सिंध विजय तथा ब्लूचियों का दमन किया।

### दक्षिण भारत का अभियान

- मुगलों में प्रथम शासक था जिसने दक्षिण भारत का अभियान किया था।
- 1593 ई. मुगल सेना ने अहमदनगर की शासिका चांदबीबी के मध्य युद्ध हुआ।
- 1601 ई. में असीरगढ़ को मुगलसेना में विजित कर लिया।

उपरोक्त अभिमानों से अकबर ने भारत में एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया, तथा केन्द्रीयकृत प्रशासन को अपनाया। अकबर मुगल साम्राज्य का वास्तविक माना जाता है।

### B - मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक एवं विश्वधरोहर स्थलों पर प्रकाश डालिए ?

मध्यप्रदेश में ऐतिहासिक एवं पुरास्थल के रूप में विभिन्न कालखण्डों में निर्मित, स्तूप, मंदिर, किले, महल स्थित है।

जो अपनी शिल्पकला और वास्तुकला की भव्यता द्वारा पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

### विश्वधरोहर स्थल-

**खजुराहो-** म.प्र. के छतरपुर जिले में स्थित है यहां के मंदिर भारतीय स्थापत्य एवं शिल्पकला के उत्कृष्ट

which he spread the theory of “All Religions are Same”.

### B - Highlight historical and world heritage sites in Madhya Pradesh?

Tourism in Madhya Pradesh has been an attraction of India because of its location in the centre of the country. It has been home to the cultural heritage of Hinduism, Buddhism, Jainism etc. Innumerable monuments, but exquisitely carved temples, stupas, forts & palaces are dotted all over the state. Madhya Pradesh has won Best Tourism State National award for 3 consecutive years i.e. 2017, 2016 and 2015.

### World heritage sites -

उदाहरण है।

नागरशैली में निर्मित मंदिरों का निर्माण चंदेल वंश के शासकों ने करवाया। उस समय 85 मंदिर थे लेकिन वर्तमान में 22 मंदिर ही अस्तित्व में हैं।

मंदिर – पश्चिमी समूह, पूर्वी समूह, दक्षिण समूह  
पश्चिमी समूह— कंदरिया महादेव, चौंसठ योगिनी चित्रगुप्त, विश्वनाथ, लक्ष्मण एवं मंतगेश्वर मंदिर आदि।  
पूर्वी समूह— इस समूह में पार्श्वनाथ मंदिर, घटाई मंदिर, आदिनाथ मंदिर आदि।

दक्षिणी समूह— इस समूह में दुल्हादेव मंदिर व चतुर्भुज मंदिर आदि।

वर्ष 1986 में इस मंदिरों को विश्वधरोहर घोषित किया गया।

**साँची**— साँची स्तूप की खोज 1818 ई. में जनरल टेलर ने की थी। यूनेस्को द्वारा वर्ष 1989 ई. में साँची स्तूप को विश्वधरोहर घोषित किया गया।

यह बौद्ध धर्म का प्रमुख स्थल है, इनका निर्माण सम्राट आशोक ने करवाया था।

स्थल— वेदिसगिरि, चेतयगिरि, काइनाथ, काकणाय आदि।  
वर्ष 2017 में साँची स्तूप का छायाचित्र 200 रुपये के नोट पर छापा गया है।

**भीमबेटिका की गुफाएँ**—

- रायसेन जिले में स्थित है, वर्ष 2003 में यूनेस्को की विश्वधरोहर सूची में शामिल किया गया।  
आदिमानव द्वारा निर्मित शैल चित्रों और शैलाश्रयों के लिए प्रसिद्ध है।
- इनकी खोज 1957–58 ई. में डॉ. विष्णुधर वाकणकर ने की थी।

**ऐतिहासिक स्थल**

**चंदेरी**— अशोक नगर जिले में बेतवा नदी के किनारे स्थित नगर है। जिसका प्राचीन नाम चंद्रगिरि था।

- यह बावडियों का शहर भी कहा जाता है।  
अन्य स्थल – हवा महल, बादल महल, शहजादी आदि।

**मांडू**— मांडू को महलो का शहर, मछली की नगरी, सिटी ऑफ जॉय व करीमाबाग नगर भी कहा जाता है।  
स्थल— अशरफी महल, नीलकंठ महल, दाई का महल, दिल्ली दरवाजा आदि।

**महेश्वर** — नर्मदा नदी के तट पर स्थित शहर है जिसका प्राचीन नाम महिष्मति तथा इसे गुप्तकाशी भी कहा जाता है।

**भोजपुर**— रायसेन जिले में बेतवा नदी के किनारे स्थित है, परमार राजा भोज द्वारा भोजपुर मंदिर का निर्माण

Although the modern state of Madhya Pradesh came into being in 1956, its cultural heritage is ancient and chequered.

Three sites in Madhya Pradesh have been declared World Heritage Sites by UNESCO:

1. The Khajuraho Group of Monuments

The Khajuraho Group of Monuments is a group of Hindu temples and Jain temples in Chhatarpur district, Madhya Pradesh. Most Khajuraho temples were built between 950 and 1050 by the Chandela dynasty. The Kandariya Mahadeva Temple is decorated with a profusion of sculptures with intricate details, symbolism and expressiveness of ancient Indian art.

2. Bhimbetka -

Bhimbetka rock shelters, series of natural rock shelters in the foothills of the Vindhya Range, central India. Discovered in 1957, the complex consists of some 700 shelters and is one of the largest repositories of prehistoric art in India. The shelters were designated a UNESCO World Heritage site in 2003. The complex is surrounded by the Ratapani Wildlife Sanctuary.

3. Bodhha Stupa of Sanchi -

Sanchi Stupa is a Buddhist complex, famous for its Great Stupa, on a hilltop at Sanchi Town in Raisen District. The Great Stupa at Sanchi is one of the oldest stone structures in India, and an important monument of Indian Architecture. It was originally commissioned by the emperor Ashoka in the 3rd century BCE. Its nucleus was a simple hemispherical brick structure built over the relics of the Buddha.

Other historical places in Madhya Pradesh are -

- There are 20 caves of Udayagiri near Bhelsa in Vidisha district of Madhya Pradesh. These caves belong to the 4th or 5th century A.D. which present a unique architectural example of Gupta period.
  - Gwalior Fort was constructed by Raja Suraj Sen. It is huge, large and strong fort, that it is known as the Jewels of the fort.
  - Chanderi fort, situated at the river Betwa was constructed by Kirtipal, Pratihar king in 11th century Jharkhand, Hawa Mahal and Naukhanda Mahal of this fort. Near about 800 Rajput women committed 'Jauhar' at the time of Babar's attack.
  - Orchha fort is an indication of bravery, strength and gallantry of Bundela dynasty rulers.
- There are many other places also in Madhya Pradesh which are important from both perspective i.e. for tourism and historical point of view.

करवाया था।

- इस मंदिर को उत्तर भारत का सोमनाथ मंदिर भी कहा जाता है।
- यहाँ विश्व का सबसे बड़ा शिवलिंग स्थापित है।
- मंदिर परिसर में पार्वती गुफा व आचार्य माटुंगा की समाधि स्थल है।

#### भरहुत स्तूल—

- म.प्र. के सतना जिल के उचेहरा में स्थित शुंगकालीन बौद्ध स्तूप है,
- इसकी खोज वर्ष 1873 में अलेक्जेंडर कनिंघम ने की थी।
- वर्तमान अवशेष कोलकत्ता संग्रहालय में संरक्षित किये गये हैं।

#### बावनगजा—

- म.प्र. के बड़वानी जिले में स्थित प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल है।
- यहाँ पर प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा और भगवान आदिनाथ की 72 फीट ऊँची मूर्ति स्थल हैं।
- यहाँ श्रवणबेलगोला के आधार पर प्रत्येक 12 वर्ष में महामस्तकाभिषेक का आयोजन होता है।

#### C - गांधी जी का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान को समझाइयें ?

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के काल का 'तृतीय चरण' गांधी युग के नाम से जाना जाता है।

यह भारतीय स्तंत्रता संग्राम का अंतिम चरण था इसमें गांधी जी मुख्य केन्द्र बिंदु रहें।

इस आंदोलन में राष्ट्रवादियों, क्रांतिकारियों, सैनिकों, मजदूरों सभी ने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा लेकिन महात्मा गांधी का योगदान महत्वपूर्ण रूप से रहा।

#### गांधी जी के प्रारंभिक सत्याग्रह—

**चम्पारण सत्याग्रह—** बिहार के चम्पारण में 1917 ई. में हुआ। जिसके प्रमुख कारण थे— चम्पारण में नील बागान के मालिकों द्वारा 'तकावी ऋण' और तिनकाठिया व्यवस्था थी।

#### खेड़ा सत्याग्रह—

- यह सत्याग्रह 1918 ई. में ब्रिटिश सरकार की राजस्व वसूली के विरोध में किया गया था।
- इसके प्रमुख नेता गांधी जी, वल्लभभाई पटेल आदि थे।

#### असहयोग आंदोलन—

- 1920 ई. में यह आंदोलन प्रारंभ किया।
- गांधी जी ने 'कैसर-ए-हिन्द' की उपाधि वापस कर दी।

#### C - Explain Gandhi's contributions to the national movement?

Mahatma Gandhi is perhaps the most widely recognized figure of the Indian Nationalist Movement for his role in leading non-violent civil uprisings. He first employed the non violent approach in South Africa where he was serving as an expatriate lawyer. His contribution in Indian national movement can be understood by his following movements -

#### **The Satyagraha Movement:**

One of his major achievements is in the year 1918 were the Champaran and Kheda agitations which are also called a movement against British landlords. The farmers and peasantry were forced to grow and cultivate Indigo and were even forced to sell them at fixed prices. Finally, these farmers pledged to Mahatma Gandhi which resulted in non-violent protest. Wherein Gandhiji won the battle.

Kheda, in the year 1918 was hit by floods and farmers wanted relief from tax. Using non cooperation as his main weapon Gandhiji used it in pledging the farmers for nonpayment of taxes

#### **Khilafat Movement:**

Khilafat Movement is all about the worldwide protest against the status of Caliph by Muslims. Finally, Mahatma Gandhi had an All India Muslim Conference and became the main person for the event. This movement supported Muslims to a great

- स्वराज की प्राप्ति हेतु सरकार विरोधी गतिविधियों को अपनाया गया।
- 2 फरवरी 1922 को इस आंदोलन को वापिस ले लिया जिसका प्रमुख कारण 'चौरी चौरा कांड' की घटना थी।

### सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)–

- 12 मार्च 1930 को ऐतिहासिक सत्याग्रह की शुरुआत की।
- 12 मार्च से 'अप्रैल 1930 को दांडी मार्च किया गया।
- 6 अप्रैल 1930 को दांडी में मुट्ठी भर नमक उठाकर कानून को तोड़ा।
- इस अभियान की तुलना नेपोलियन के 'एल्बा मार्च' एवं मुसोलिनी के 'रोम मार्च' से की थी।

### गोलमेज सम्मेलन–

- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस की तरफ से गांधी जी ने भाग लिया।
- इस सम्मेलन सांप्रदायिक समस्या पर विवाद के कारण पूरी तरह असफल रहा।

### क्रिप्स प्रस्ताव (मार्च 1942)–

- 1942 ई. को क्रिप्स मिशन भारत आया। जिसका उद्देश्य भारत में स्वशासन की स्थापना तथा भारत को 'डोमिनियन स्टेट्स' दिया जाएगा।
- इसको गांधी जी ने 'उत्तर दिनांकित चेक' (Post Dated Cheque) कहाँ है।

### भारत छोड़ो आंदोलन – (अगस्त 1942)–

- 9 अगस्त 1942 को इस आंदोलन का प्रारंभ बंबई से किया गया।
  - इस आंदोलन के प्रमुख एवं प्रारंभिक नेतृत्वकर्ता गांधी जी एवं जनता थी।
  - इस आंदोलन का प्रसार बंगाल, बिहार संयुक्त, मद्रास और बंबई तथा समूचे भारत में देखा गया।
  - इसमें भूमिगत आंदोलन तथा रेडियों के माध्यम से प्रसारण किया गया।
  - इस आंदोलन में 'करो या मरो' का नारा समूचे राष्ट्र में गूँज उठा
- गांधी जी के इस समस्त आंदोलनों एवं सत्याग्रह ने भारतीय स्वतंत्रता में अहम भूमिका अदा की।

इन समस्त आंदोलनों में भारत छोड़ो आंदोलन ने भारता को स्वतंत्र करने हेतु ब्रिटिश सरकार को मजबूर कर दिया।

extent and the success of this movement made him the national leader and facilitated his strong position in the Congress party.

### The Non-Cooperation Movement

The first of the Gandhi-led movements was the Non-Cooperation Movement lasting from September 1920 until February 1922. The movement gained popularity, and soon, millions of people were boycotting British-run or cooperative establishments. This meant that people left their jobs, removed their children from schools, and avoided government offices. The name Mahatma Gandhi became popular.

### The Dandi March, Civil Disobedience, and Salt Satyagraha

The abrupt ending of the Non-Cooperation Movement did nothing to stop the quest for independence. On March 12, 1930, protesters took part in the Dandi March, a campaign designed to resist taxes and protest the British monopoly on salt. Gandhi began the 24-day, 240-mile march with 79 followers and ended with thousands. When the protesters reached the coastal town of Dandi, they produced salt from saltwater without paying the British tax. This act was accompanied by civil disobedience across the country.

### The Quit India Movement

The Quit India Movement began on August 8, 1942, during World War II. Indian Congress Committee, under the urging of Gandhi, called for a mass British withdrawal and Gandhi made a "Do or Die" speech. British officials acted immediately and arrested nearly every member of the Indian National Congress party. England, with a new Prime Minister, offered some concessions to the Indian demands such as the right to make independent Provincial constitutions, to be granted after the war; they were not accepted.

**D - सांस्कृतिक उपलब्धियों के आधार पर गुप्तकाल को प्राचीन भारत का स्वर्णयुग कहना कहाँ तक उचित होगा ?**

गुप्त राजवंश या गुप्त वंश प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों में से एक था। इसे भारत का एक स्वर्ण युग माना जाता है। मौर्य वंश के पतन के बाद दीर्घकाल तक भारत में राजनीतिक एकता स्थापित नहीं रही। कृषाण एवं सातवाहनों ने राजनीतिक एकता लाने का प्रयास किया। मौर्योत्तर काल के उपरान्त तीसरी शताब्दी ई. में तीन राजवंशों का उदय हुआ जिसमें मध्य भारत में नाग शक्ति, दक्षिण में बाकाटक तथा पूर्वी में गुप्त वंश प्रमुख हैं। मौर्य वंश के पतन के पश्चात् नष्ट हुई राजनीतिक एकता को पुनर्स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश को है। गुप्त साम्राज्य की नींव तीसरी शताब्दी के चौथे दशक में तथा उत्थान चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुआ। गुप्त वंश का प्रारंभिक राज्य आधुनिक उत्तरप्रदेश और बिहार में था।

गुप्तकाल को स्वर्ण युग क्लासिकल युग एवं पैरीक्लीन युग कहा जाता है। अपनी जिन विशेषताओं के कारण गुप्तकाल को स्वर्णकाल कहा जाता है, वे इस प्रकार हैं— साहित्य, विज्ञान एवं कला के उत्कर्ष का काल, भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार का काल, धार्मिक सहिष्णुता एवं आर्थिक समृद्धि का काल, श्रेष्ठ शासन व्यवस्था एवं महान सम्राटों के उदय का काल एवं राजनीतिक एकता का काल, इन समस्त विशेषताओं के साथ ही हम गुप्तकाल को स्वर्णकाल क्लासिकल युग एवं पैरीक्लीन युग कहते हैं।

वास्तव में गुप्तकाल सांस्कृतिक उपलब्धियों से भरा-पूरा काल कहा जाता है। गुप्तकाल साहित्य, कला एवं विज्ञान के उत्कर्ष का काल था। इस काल में भारतीय संस्कृति का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। यह काल श्रेष्ठ शासन व्यवस्था एवं महान सम्राटों के उदय के लिए भी जाना जाता है। इस काल में राजनैतिक एकता, धार्मिक सहिष्णुता और आर्थिक समृद्धि भी अपने चरम पर थी। इतनी सारी विशेषताओं के होने की वजह से ही अधिकांशतः इतिहासकारों ने गुप्त काल को स्वर्णयुग, क्लासिकल युग एवं पेरिक्लीन युग कहा है।

वास्तव में गुप्तकाल के शासकों ने प्राचीन भारतीय इतिहास पर जो अमिट छाप छोड़ी है, उससे वो अमर हो गये हैं, आगे आने वाली पीढ़ियाँ सदियों तक भारतीय इतिहास के इस युग को याद करेंगी और उसको आदर्श के रूप में पुनः स्थापित करेंगी।

**D - How far will be proper to call the Gupta period the Golden Age of ancient India on the basis of cultural achievement ?**

The term golden age refers to the age of Indian history during which remarkable progress were witnessed in different spheres of human life like politics, economy, culture, society etc.

**Elements of Golden age in Gupta period.**

**Polity**

- With the decline of Mauryan Empire, the unity and integrity of India shattered. The central authority disappeared and regional principalities emerged everywhere.

- This trend was reversed by emergence of Gupta rulers in 4th Century AD. They ruled over extensive empire with their capital at Pataliputra.

- Therefore, the Gupta age witnessed political unification of India after a long period of more than 500 years after the decline of Mauryans.

**Economy**

- Gupta age was full of economic prosperity. According to Chinese traveller Fa-hien Magadh, the power centre of the Gupta empire was full of cities and its rich people.

- In ancient India, the Guptas issued the largest number of gold coins which were called 'dinaras' in their inscriptions.

**Art and Literature**

- Gupta rulers were patrons of art and literature. For example, Samudragupta was represented on his coins playing the vina and Chandragupta II is credited with maintaining in his court nine luminaries.

- During the Gupta age beautiful images of Buddha were fashioned at Sarnath and Mathura, but the finest specimens of Buddhist art in Gupta times are the Ajanta paintings. Although these paintings covered the period from the first century BC to the seventh century AD, most of them relate to Gupta times.

- The Gupta age is remarkable for the production of secular literature. For example Kalidasa belonged to this age. He was the greatest poet of classical Sanskrit literature and wrote Abhijnanashakuntalam which is very highly regarded in world literature.

- There was also an increase in the production of religious literature. The two great epics the Ramayana

and Mahabharata were almost completed by the fourth century AD.

### Science and Technology

- In mathematics, a work called Aryabhatiya was written by Aryabhata in age. Aryabhata displayed an awareness of both the zero system and the decimal system. A Gupta inscription of 5th century AD from Allahabad suggests that decimal system was known in India.
- The Gupta age craftsmen distinguished themselves by their work in iron and bronze. For example, iron pillar found at Mehrauli in Delhi manufactured in the 4th century AD has not gathered any rust over the subsequent fifteen centuries which is a great tribute to the technological skill of the craftsmen.

However, it should be noted that Gupta age did not witness progress in the social development, for example the number of chandalas( untouchables) increased and their condition worsened during the Gupta age, the first example of the sati occurred during the Gupta period in 510 AD etc. In this way the golden character of Gupta age can be accepted only in degrees not in absolute terms.

